चन्दामामा
दिसम्बर १९८३

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

बरसों के बाद इसबार दीवाली के अवसर पर अधिक पृष्ठों का चंदामामा विशेषांक को पाकर आप लोग खुश हुए होंगे।

इसबार की बेताल कथा (शक्ति-हीन राक्षस) का आधार है "वसुन्धरा" की रचना।

अमर वाणी

जीवन ग्रहणे नम्राः ग्रहीत्वा पुनरून्नताः ।
किं कनिष्ठाः, किमु ज्येष्ठाः, घटी यंत्रस्य दुर्जनाः ॥

[पेठ पालने के लिये बहुत झुक जाते हैं, और खूब मिलने पर अखड कर उठते है। जिस तरह पानी उठाने का यंत्र खाली है तो नीचे, और भरने पर ऊपर, उसी तरह बुरे लोग भी कभी छोटे कभी बड़े होते है।

वर्षः ३६ दिसम्बर १९८३ अंकः ४

एक प्रतिः २-०० :: वार्षिक चन्दाः २४-००

चन्दामामा विशेष संवाद

'गीतांजलि' के गीत

गीतांजलि का जन्म मेरठ में सन् १९६२ में हुआ था। सोलह वर्ष पूरे हो भी नहीं पाये थे कि कैंसर मौत का बुलावा बन कर आ गया।

उसकी मृत्यु के कुछ दिनों के बाद उसके बिस्तर के नीचे से उसकी माँ को गीतांजलि के बनाये कुछ गीत मिले।

"मेरा पथ वज्रपातों के प्रकाश से आलोकित है।" ऐसे भाव भीने उसके अनेक गीतों को इंग्लैण्ड के ओरियेंटल प्रेस ने हाल ही में प्रकाशित किया है।

आधुनिक "अज्ञान"

विज्ञान के प्रकाश में एक मानव दूसरे मानव के लिए खाई खोद रहा है। सन् १९४२ में प्रयुक्त अणुबम ने हिरोशिमा को नष्ट कर दिया था। अभी सारे संसार में अणुबमों का जो अम्बार लगा है, उसे यदि हिरोशिमा पर छोड़े गये बम के बराबर मात्रा में बाँटा जाये तो उन्हें मिनट में एक के हिसाब से लगातार दो वर्षों तक छोड़ा जा सकता है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक हेलेन कोलुडीकार का कहना है कि "आयुर्विज्ञान और पर्यावरण के क्षेत्र में होने वाले भयंकर दुष्परिणामों की कल्पना तक नहीं कर सकने वाले देशों पर 'अज्ञान' का ही शासन है।"
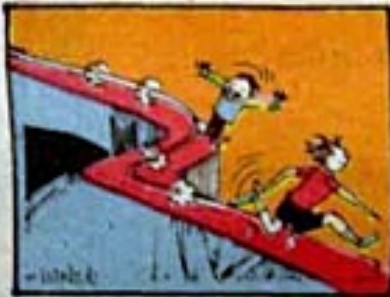
दौड़ में नया कीर्तिमान

केन्या निवासी मैक ब्राइड ने एक मील की दूरी को तीन मिनट अट्ठाइस सेकण्ड में दौड़ कर नया प्रतिमान स्थापित किया है। अक्लैण्ड में हुई इस दौड़ प्रतियोगिता में एक सेकेण्ड अधिक लगाने वाले अमरीकी स्टीव्स कॉट ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

क्या आप जानते हैं ?

१. मानव शरीर की सभी रक्त-नलिकाओं को एक के पीछे एक को जोड़ दिया जाये तो उनकी दूरी कितनी होगी ?

२. मनुष्य की आँख कितने रंगों को पहचान सकती है ?

३. मनुष्य कितने प्रकार की गन्धों को पहचान सकता है ?

४. विश्व की किस भाषा में सर्वाधिक शब्द हैं ?

५. एक ही समय में एक हाथ से लिखते हुए दूसरे हाथ से चित्र बनानेवाले मेधावी कलाकार कौन थे ?

उत्तर पृष्ठ ६४ पर

अनोखा हीरा

अवन्ती राज्य में मणिभद्र नाम का एक व्यापारी था। वह हीरों का व्यापार करता था। एक बार जब वह देश-विदेश में हीरों का व्यापार करता हुआ वापस अवन्ती लौटा तो एक ही मूल्यवान और अद्भुत हीरा उसके पास बचा रहा। शेष साधारण हीरे और माणिक्य थे। उस अद्भुत और अपूर्व हीरे के बारे में मणिभद्र का कहना था कि जो भी उसे धारण करेगा, सदा उसका भविष्य हीरे की तरह चमकता रहेगा।

अवन्ती के राजा को उस अद्भुत हीरे की खबर मिली। उसने मणिभद्र को बुला कर कहा- "तुम्हारे पास जब भी कोई असाधारण और दुर्लभ रत्न हो तो उसे सबसे पहले मुझे दिखाना तुम्हारा कर्तव्य बनता है। परन्तु तुमने ऐसा नहीं किया, बल्कि उलटा उसका प्रचार करके उसे बेचने का प्रयास किया। ऐसा क्यों ? तुम इसकी सफाई में क्या कहना चाहते हो ?"

राजा से इस प्रकार के कठोर वचन सुन कर वह डर गया। थोड़ी ही देर पहले सेनापति ने मणिभद्र को अपने घर बुलवा कर धमकी देते हुए उस अद्भुत हीरे की माँग की थी। लेकिन सेनापति से उसके उचित मूल्य मिलने की आशा न थी। इसलिए वह उसे देना नहीं चाहता था लेकिन उसे नाराज़ करना भी खतरे से खाली न था। अब राजा की इस बात से वह और भी पेशोपेश में पड़ गया। फिर भी वह विनयपूर्वक बोला- "महाराज ! मैं इसी देश में पैदा हुआ और यहीं पल कर बड़ा हुआ। मैं तो ऐसा कुछ सोच भी नहीं सकता जिससे आप की मर्यादा में आँच आये। मैं तो कई वर्षों के बाद विदेश से लौटा हूँ। दरअसल सबसे पहले मैं आप की सेवा में ही आना चाहता था कि आप का सन्देश मिला।"

राजा यह उत्तर सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और अभिमान से बोला- "तब तो तुम मेरे लिए वह अद्भुत और दुर्लभ हीरा अवश्य साथ लाये

होगे, जिसकी राज्य भर में चर्चा है।"

मणिभद्र यह सुन कर घबरा गया। लेकिन चतुराई से उत्तर देता हुआ बोला- "महाप्रभु! वह हीरा तो मैं साथ न ला सका क्यों कि आप का आदेश मिलते ही मैं जल्दी में चला आया।"

"कोई बात नहीं। यदि साथ नहीं ला पाये तो अभी उसे ले आओ। मैंने उसी हीरे के लिए तुम्हें यहाँ बुलाया था।" राजा ने आदेश दिया।

मणिभद्र गहरी सांस लेकर राजमहल से चल पड़ा। राजमहल से वह बाहर निकला ही था कि मंत्री मिल गया।

मंत्री ने अपने पास बुलवाते हुए धमकी भरे शब्दों में कहा- "मैं नहीं जानता कि तुम राजा को कैसा हीरा दोगे। लेकिन वह दुर्लभ हीरा तो मुझे ही मिलना चाहिए, वरना इस राज्य में तुम्हारा रहना कठिन हो जायेगा।"

मणिभद्र की हालत साँप-छुछुन्दर की तरह हो गई। राजा अधिकार के बल पर, मंत्री चातुरी के बल पर और सेनापति शक्ति के बल पर उचित मूल्य दिये बिना ही वह हीरा उससे झपट लेना चाहते थे। किसी प्रकार वह मंत्री से भी निबट कर घर चला गया और एक सप्ताह तक किसी से भी नहीं मिला।

एक सप्ताह के बाद राजा के भेदिये उसे पकड़ कर राजा के पास ले गये। राजा ने क्रोध भरी दृष्टि से मणिभद्र की ओर देखा। मणिभद्र ने चुपचाप राजा के हाथ में एक अँगूठी रख दी जिसमें वह आँखों को चका चौंध कर देने वाला अनूठा हीरा जड़ा हुआ था।

हीरा देख कर राजा का चेहरा खिल उठा। पर दूसरे ही क्षण क्रोध से देखते हुए बोला- "क्या यह वही असली हीरा है जिसके बारे में तुमने चर्चा की थी?"

मणिभद्र ने विश्वास दिलाते हुए कहा- "निस्सन्देह महाराज! यह वही हीरा है।" राजा ने उसे इसके बदले कोई छोटा-मोटा उपहार देकर विदा कर दिया।

रास्ते में ही मंत्री मणिभद्र का इन्तजार कर रहा था। मणिभद्र ने मंत्री से मिलते ही कहा- "महामात्य जी! मैं आप के ही पास जा रहा था।" इतना कहते हुए मणिभद्र ने अपने अंगरखे में से हीरे से जड़ी एक अँगूठी मंत्री जी के हाथ पर रख दी।

मंत्री ने अंगूठी को परखते हुए कहा- "तुमने असली हीरा तो राजा को दे दिया होगा। और मुझे कम मूल्य का साधारण हीरा दे दियां होगा। यह तो कदापि वह हीरा नहीं हो सकता।"

मणिभद्र ने विश्वास दिलाते हुए कहा- "नहीं महानुभाव! भला आप को साधारण हीरा दूँगा! यही वह असली हीरा है, जो अनोखा और अद्भुत है। यदि आप को विश्वास न हो तो किसी जौहरी से जाँच करवा लें।"

यह बात सुन कर मंत्री को मणिभद्र की बातों पर विश्वास हो गया। इसके बदले कोई छोटा-मोटा उपहार देकर उसने मणिभद्र को विदा कर दिया।

मणिभद्र जब अपने घर पहुँचा तो वहाँ सेनापति को प्रतीक्षा में बैठे हुए देख कर घबरा गया।

"आपने क्यों कष्ट किया, मैं स्वयं ही आप की सेवा में हाजिर होनेवाला था।" इतना कह कर उसने सेनापति का उचित सत्कार करने के बाद उसके हाथ में एक अगूँठी रख दी। इस अँगूठी में एक अनूठा हीरा सूर्य की तरह चमक रहा था।

इस प्रकार मणिभद्रने तीनों को प्रसन्न कर एक बहुत बड़े खतरे से अपने को बचा लिया। लेकिन कुछ ही दिनों के बाद ये तीनों राजपुरुष एक दावत में मिले जहाँ तीनों ने एक-दूसरे की अँगूठी देखी। उन तीनों में इस बात पर विवाद चल गया कि किसकी अँगूठी में वह दुर्लभ और अनोखा हीरा जड़ा हुआ है।

राजा ने दूसरे दिन मणिभद्र को अपने दरबार में मंत्री और सेनापति के सामने बुलाया और उसे डाँटते हुए कहा- "तुम्हारे पास एक ही अनोखा हीरा था न? तुमने हमें, मंत्री और सेनापति को जो अँगूठियाँ दी हैं, उनमें से किस अँगूठी में वह अद्भुत हीरा जड़ा हुआ है?"

मणिभद्र अब पहले से भी अधिक खतरे में पड़ गया था। लेकिन संभल कर बोला- "महाराज! आप अधिकार के स्वामी हैं, मंत्री महोदय बुद्धि के स्वामी हैं और सेनापति बल-पराक्रम के स्वामी हैं। भला आप लोगों के साथ मज़ाक करके हम जीवित रह सकते हैं। इन तीनों अंगूठियों में वही अद्भुत हीरा जड़ा हुआ है।"

"लेकिन तुम तो व्यापारी हो । अपनी सुविधा के अनुसार बात बदल देते हो । तुम्हारी बात का कोई भरोसा नहीं है ।" राजा ने क्रोधित होकर कहा ।

इस पर मणिभद्र ने विनय पूर्वक कहा- "महाराज ! यदि आप को विश्वास न हो तो इन तीनों अँगूठियों की राज्य के सबसे बड़े जौहरी से जाँच करवा लें ।"

दूसरे दिन राजा ने राज्य के उस बड़े जौहरी को बुला कर तीनों अँगूठियों की जाँच करवायी । जौहरीने जाँच करके कहा कि इनके तीनों हीरे अद्भुत और अपूर्व हैं । इसपर राजा, मंत्री और सेनापति तीनों बहुत प्रसन्न हुए ।

हीरे का पारखी महल से सीधा मणिभद्र के घर गया । उस समय मणिभद्र पत्नी के साथ नगर छोड़ कर जाने की तैयारी कर रहा था ।

हीरे के पारखी ने कहा- "मणिभद्र ! जैसा कि तुमने कहा था, मैंने तीनों राजपुरुषों की अगूँठियों की जाँच करके उन्हें सन्तुष्ट कर दिया है । इसके बदले तुमने वादा किया था कि वह अद्भुत हीरा मुझे दे दोगे । अब अपना वचन पूरा करो ।"

मणिभद्र ने उसके हाथ में एक अँगूठी रखते हुए कहा- "इसके अन्दर भी अनोखा हीरा जड़ा हुआ है । हीरे के व्यापारी और पारखी भाई-बन्धु के समान हैं । मैं तुम्हारी इस सहायता के लिए बड़ा कृतज्ञ हूँ ।"

"वास्तव में उस अपूर्व रत्न को सस्ते मूल्य पर किसी के हाथ में पड़ने से तुमने बड़ी चतुराई से बचा लिया है । तुम अब राजपुरुषों के क्रोध के खतरे से भी निकल गये हो । लेकिन अब नगर छोड़ कर जाने की क्या आवश्यकता है ?" हीरे के पारखी ने पूछा ।

"मैं राजा, मंत्री और सेनापति के खतरे से कैसे बच पाया, यह तो आप को विदित ही है । लेकिन राजा, मंत्री और सेनापति में जहाँ सहयोग के स्थान पर प्रतियोग और प्रतिद्वंद्व हो, वहाँ पर हर पल खतरा से भरा है । वहाँ कब अराजकता हो जायेगी, कह नहीं सकते । इसीलिए मैं राज्य को छोड़ कर जा रहा हूँ ।" मणिभद्र ने दुखी होकर कहा ।

७

[पिंगल शिथिल मन्दिर के सभी द्वारों को पार करता हुआ छठे द्वार तक पहुँच गया। इस द्वार पर पहरा देते हुए अपने गुरु पद्मपाद को देख कर वह चकित रह गया। तभी उसे लगा कि वह आँधी में तिनके के समान उड़ गया हो और फिर नीचे गिर रहा हो। उसी समय पद्मपाद ने उसे नीचे गिरने से बचा लिया।... इसके बाद]

पद्मपाद को देखते ही पिंगल की जान में जान आ गई। उसके प्राणों का भय जाता रहा। पद्मपाद ने उसे अपने हाथों में संभाल कर गिरने से बचा लिया और पूछा- "कहीं भारी चोट तो नहीं लगी, पिंगल ?"

"चोट की तो परवाह नहीं है, किसी तरह प्राण बच गये, यही बहुत है। मैं तो अभी आसमान से पृथ्वी पर गिर कर चकनाचूर हो जाता। लेकिन अब मैं कहाँ हूँ और आप यहाँ कैसे आये, यह तो मुझे समझ में नहीं आ रहा ?" इतना कह कर पिंगल ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई। यह देख कर आश्चर्य के साथ उसे निराशा भी हुई कि मन्दिर फिर से नदी के जल में डूबता जा रहा है।

पद्मपाद पिंगल के कन्धे पर हाथ रखता हुआ बोला- " इस बार हम बाजी हार गये हैं,

पिंगल ! महामाय के शिष्य नदी को फिर से जल से भर रहे हैं । मन्दिर फिर नदी के गर्भ में डूब जायेगा । आगे और भी क्या होगा, यह कहना मुश्किल है ।"

पद्मपाद और पिंगल दोनों बहुत निराश और चिन्तित हो गये । उदास हो दोनों डूबते हुए मन्दिर को निहारते रहे । उनकी चिन्ता की सीमा न रही ।

"कोई बात नहीं पिंगल ! हम जब चाहें, नदी को फिर से सुखा सकते हैं । पहले तुम अपना अनुभव सुनाओ ।" पिंगल का हौसला बढ़ाते हुए पद्मपाद ने कहा ।

पिंगल ने प्रथम द्वार से लेकर छठे द्वार तक पहुँचने की कहानी सुनाते हुए कहा।

"छठे द्वार पर पहुँचते ही तुम्हें देख कर मैं चौंक पड़ा । 'रुक जाओ' कहती हुई आवाज भी तुम्हारी थी । इसलिए थोड़ी देर के लिए मुझे शंका हो गई । तभी आँखों को चका चौंध कर देने वाली तुम्हारी गदा भी चमक उठी । इससे मेरी आँखें बन्द हो गईं । बस ! तभी मेरी पीठ पर तड़ातड़ लाठियाँ बजने लगीं ।

फिर ऐसा लगा जैसे किसी दैत्य के विकराल पंजों ने मेरे शरीर को जकड़ लिया हो और फिर आसमान में उछाल दिया हो । धरती पर गिरने के पहले यदि तुम अपने हाथों में थाम न लेते तो शायद ही सही सलामत बचपाता ।मेरे यहाँ खडे रहने का कारण तुमही हो ।"

"ओह ! तो ऐसी बात है !" क्रोध से आँखें लाल करते हुए पद्मपाद ने कहा । "पिंगल ! मैंने कभी नहीं सोचा था कि महामाय के शिष्य मेरी शक्ल बना कर तुम्हें इस प्रकार धोखा दे देंगे । लेकिन इसके पहले के सभी द्वारों पर तैनात दुष्ट शक्तियों पर तुमने विजय प्राप्त कर ली, यह मेरे लिए सचमुच बहुत ही प्रसन्नता की बात है । मैं तुम्हारी बहुत तारीफ़ करता हूँ ।"

यह सुन कर पिंगल का हौसला बढ़ गया । उसके चेहरे पर भय के बदले हँसी दिखाई देने लगा । उसने मन्दिर की ओर देखते हुए पद्मपाद से कहा- "मंदिर फिर से नदी के गर्भ में डूबता

जा रहा है । हमें शीघ्र ही कुछ करना चाहिए, पद्मपाद !"

पद्मपाद ने उसे भरोसा दिलाते हुए कहा- "घबराओ नहीं पिंगल ! आज हम लोग कुछ नहीं कर सकते । आज से तीन दिनों के बाद एक पर्व है । उस दिन फिर से तुम्हें महामाय की समाधि में प्रवेश करना होगा । तब तक हमें यहीं पर ठहरना होगा । लेकिन इन तीन दिनों में यदि तुम चाहो तो कुछ मनोरंजन कर सकते हो ।" क्या चाहते हो कहो ।

इतना कह कर पद्मपाद ने अपनी गदा घुमा कर एक मंत्र का पाठ किया । दूसरे ही क्षण उन निर्जन प्रदेश में एक सुन्दर महल प्रकट हो गया । उस की सुंदरता का विवरण देना मुश्किल था ।

पिंगल इस चमत्कार को देख कर हैरान रह गया । पद्मपाद पिंगल को महल की ओर ले गया । जैसे ही दोनों मुख्य द्वार पर पहुँचे, फाटक अपने आप खुल गया और लम्बी भुजाओं वाले दो काले व्यक्तियों ने इन्हें झुक कर प्रणाम किया ।

पिंगल यह सब देख कर चकित था और पद्मपाद के जादू पर मोहित था । महल की सुन्दरता पर आश्चर्य प्रकट करते हुए उसने पद्मपाद से पूछा- "द्वार पर हमलोगों का स्वागत करने वाले ये लोग कौन हैं ?"

पद्मपाद ने समझाते हुए कहा- "जादू के महल के समान ही ये भी जादू के राक्षस हैं, जो तीन दिनों तक हमलोगों का मनोरंजन करेंगे । ये हमारा मन बहलाने के लिए तलवार, लाठी के युद्धों तथा कुश्ती की प्रतियोगिता दिखायेंगे । उन को देख तुम्हारी थकावट दूर हो जायेगा ।"

इसके बाद पिंगल तथा पद्मपाद दोनों महल के भीतर गये । एक और द्वार पार कर वे एक विशाल कक्ष में आये । यहाँ बहुत से पहलवान कसरत कर रहे थे । ये देखने में दैत्य के समान लग रहे थे । इन्हें देख कर पिंगल को कुछ सन्देह हुआ । इसलिए उसने पद्मपाद से पूछा- "ये दैत्याकार पहलवान हम लोगों का नुकसान

तो नहीं करेंगे ? हमें कोई आपत्ती तो नहीं है न ?"

"नहीं, डरने की कोई बात नहीं, पिंगल ! ये तो हमारे सेवक हैं और हमारी सहायता के लिए हैं।" पद्मपाद ने पिंगल को हिम्मत देते हुए कहा और पहले द्वार पर स्वागत करने वाले काले राक्षसों को संकेत से कुछ कहा। पद्मपाद का संकेत पाकर वे दोनों राक्षस वहाँ से चले गये।

इसके बाद पद्मपाद और पिंगल उसी विशाल कक्ष में लगे मुलायम गद्दों पर बैठ गये। शीघ्र ही सोने की थालियों में प्रकार-प्रकार के स्वादिष्ट भोजन लिए सुन्दरियाँ आ पहुँचीं। उनके चेहरों पर सुहावना हँसी थी।

इन्हें देख कर हैरान हो पिंगल ने पद्मपाद से फिर प्रश्न किया- "ये स्त्रियाँ देखने में तो गन्धर्व लगती हैं। इनकी स्वर्गीय सुन्दरता तो अप्सराओं को भी लजाती हैं। क्या ये भी मायावी और पिशाचिनी हैं ?"

पद्मपाद ने पिंगल को सावधान करते हुए कहा- "थोड़ा धीरे बोलो। चाहे ये जो भी हों, यदि ये सुन लेंगी तो इन्हें बुरा लग सकता है। हालांकि ये इस समय हमारी सेवा के लिए आई हुई हैं, फिर भी इनका अपमान करना अच्छा नहीं होगा। अभी ये सब तीन दिनों के लिए गन्धर्व नारियाँ ही हैं। उनसे तुम जो चाहो करवा ले सकते हो।

पद्मपाद और पिंगल ने फिर भोजन किया। तभी वहाँ कुछ पहलवान और योद्धा आ गये और तरह-तरह का रुप बदल कर कुश्ती तथा खड्ग-युद्ध कला का प्रदर्शन करने लगें।

इस प्रकार स्वादिष्ट भोजन और मनोरंजन में तीन दिन कैसे बीत गये, पता न चला। चौथे दिन पद्मपाद ने उस जादू के महल तथा मायावी दैत्यों और पिशाचिनियों को अदृश्य कर दिया और उसके बाद उसी स्थान पर जा पहुँचा जहाँ पर मंत्र पाठ कर उसने नदी का जल सुखाया था।

नदी के गर्भ में स्थित शिथिल मन्दिर की ओर हाथ का इशारा करते हुए पद्मपाद बोला-

"पिंगल ! मैं अब फिर से इस नदी का जल सुखा रहा हूँ। आज फिर तुम्हें महामाय की समाधि में प्रवेश कर उस छोड़े हुए काम को पूरा करना है। मार्ग के सभी खतरों को तुम भली-भाँति जानते हो। तुम्हें क्या-क्या सावधानी बरतनी है, यह बताने की शायद अब विशेष आवश्यकता नहीं है। उन्हें तुम साफ़ साफ़ जानते ही हो।"

पिंगल ने बड़े उत्साह और दृढ़ निश्चय के साथ कहा-

"ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है। पिछली बार जो मार पड़ी, उसके घाव अभी तक भरे नहीं हैं। उनके सारे दाव-पेंचों को अब मैं जान गया हूँ। अब मैं महामाय के शिष्यों और उनके मायावी दैत्यों की अच्छी तरह खबर लूँगा। आप निश्चिंत रहे।"

पद्मपाद समाधिस्थ हो नदी का जल सुखाने के लिए मंत्र जाप करने लगा। थोड़ी ही देर में मन्दिर का शिखर दिखाई पड़ा। पिंगल निर्भय होकर मन्दिर के प्रथम द्वार की ओर बढ़ा।

प्रथम द्वार पर फुफकारते हुए नाग पर जैसे ही पिंगल ने हाथ लगाया, नाग निष्प्राण होकर नीचे गिर पड़ा। तभी किवाडों के पीछे से एक भयंकर आवाज सुनाई पड़ी।

"मेरा नाम पिंगल है और मैं अवन्ती नगर का मछुआरा हूँ।" इस प्रकार अपना परिचय देते हुए पिंगल ने किवाड़ों को खोल दिया। किवाड़ खुलते ही एक पर्वताकार दैत्य तलवार लहराते हुए सामने आया और उसने पिंगल को अपनी गर्दन झुकाने का आदेश दिया। पिंगल ने निर्भय होकर उसकी आज्ञा का पालन किया। इस पर वह पर्वताकार दैत्य धम्म से जमीन पर गिर गया। इस में आश्चर्य की बात कुछ भी न थी क्यों कि यह सब वैसे ही हुआ जैसे एक बार पहले हो चुका था।

पिंगल एक-एक करके पहले जैसा ही पाँच द्वारों को बड़ी आसानी से पार कर गया। लेकिन छठे द्वार पर पहुँचते ही एक दम ठिठक गया।

वहाँ उसकी माँ रो-रो कर कह रही थी-

हट जाओ।" इस प्रकार कहते हुए पिंगल ने पास रखी हुई एक तलवार उठा ली और उस स्त्री की ओर झपटा। वह पिशाचिनी चीखती हुई अदृश्य हो गई। पिंगल खिलखिला कर हँस पड़ा।

तलवार वहीं फेंक कर वह छठा द्वार भी पार कर गया। सामने एक रेशमी परदा हवा में फड़फड़ा रहा था। झीने परदे के पीछे से एक सुन्दर आसन दिखाई पड़ा जिससे चमचमाती किरणें निकल रही थीं।

पिंगल बेधड़क रेशमी परदे को हटा कर भीतर चला गया। चमकीले रत्नों और मणि-माणिक्यों से चमचमाते सिंहासन पर महामाय इस प्रकार बैठा था मानो वह ध्यान कर रहा हो। पिंगल के मन में पल भर के लिए यह सन्देह हुआ कि कहीं महामाय जीवित तो नहीं है! लेकिन तुरत वह समझ गया कि सत्य क्या है और अब उसे क्या करना है।

वह साँस रोक कर एक-एक कदम बढ़ाते हुए महामाय के पास गया। उसकी नज़र महामाय के दायें हाथ की उंगलियों पर पड़ी। उसकी अँगूठी से सूर्य के समान किरणें निकल रही थीं। वह चमक रहा था। पिंगल ने निर्भय होकर महामाय के दायें हाथ की अंगुली से अँगूठी निकाल ली।

अब उसे दो चीजें और लेनी थीं वज्रखचित मूठ वाली छुरी महामाय की कमर से

"बेटा! तुम यह खतरा क्यों मोल ले रहे हो? वापस चलो। पद्मपाद जान-बूझ कर तुम्हारी जान लेने के लिए यह सब कर रहा है।"

पिंगल अपनी माँ को वहाँ देख कर हैरान था। लेकिन पिछले अनुभव से वह समझ गया कि यह सब झूठी माया है। यह सब उसी दैत्य का कारनामा है जिसने उसे पद्मपाद बन कर धोखा दिया था। हो न हो, वही उसकी माँ बन कर लक्ष्य से उसे भटकाने आया है।

इसलिए उसने दृढ़ता पूर्वक कहा- "मैं जानता हूँ, तुम कौन हो। पिछली बार पद्मपाद बनकर धोखा दिया था, अब मेरी माँ का रूप बना कर मुझे धोखा नहीं दे सकते। मेरे रास्ते से

लटक रही थी। पिंगल ने उसे भी निकाल कर अपनी कमर में बाँध लिया। अब उसे सिर्फ़ भूगोल लेना था। सोचने लगा कि वह कहाँ रखी हुई होती है।

पिंगल ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। उसे एक कोने में कुछ सीढ़ियाँ दिखाई पड़ीं। उन सीढ़ियों के नीचे एक ऊँची मेज़ पर चाँद के समान चमकता-सा भूगोल दिखाई पड़ा। पिंगल ने उसके समीप जाकर उसके अन्दर झाँका। उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस भूगोल में न सिर्फ भिन्न-भिन्न देश और उनकी सीमाएं अंकित हैं, बल्कि वहाँ के लोग भी उसमें दिखाई पड़े। उसने वह भूगोल वहाँ से उठा लिया।

उसे वहाँ से अब तीनों दुर्लभ चीजें मिल चुकी थीं। उसने अन्तिम बार महामाय और उसके सिहांसन पर नज़र डाली और बाहर निकल आया।

तभी उसके कानों में मधुर संगीत के साथ यह आवाज़ आई- "शाबाश पिंगल! तुम्हारा साहस, पराक्रम और बुद्धि प्रशंसनीय है।"

पिंगल को ऐसा लगा जैसे महामाय बोल रहा हो। उसने मुड़ कर महामाय की ओर एक बार फिर देखा, लेकिन उसमें वास्तव में कोई चेतना नहीं थी। वह मरा हुआ सा दिखाई देर-हा था।

पिंगल सभी द्वारों को पार करता हुआ वापस बाहर निकल गया। पद्मपाद वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। पिंगल को देखते ही उसका चेहरा खिल उठा। वह खुशी से तालियाँ बजाता हुआ बोला- "पिंगल! अब हम विश्व विजयी हो गये हैं। इस संसार में हमें अब पराजित करने वाली कोई शक्ति नहीं है।

उसी समय अचानक चारों दिशाओं को कँपा देनेवाला एक धमाका हुआ और नदी के गर्भ से ताड़ वृक्ष की ऊँचाई के बराबर जल की तेज़ धारा फूट पड़ी। पद्मपाद यह देख कर भयभीत हो गया और भय से दो-चार कदम पीछे हट गया। पिंगल की आँखों के सामने अंधेरा छा गया। (—क्रमशः)

जीने का मोह

दृढ़प्रतिज्ञ विक्रम पेड़ के पास लौट आया और पेड़ पर से शव को उतार कर उसे कन्धे पर डाल सदा की भाँति चुप चाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा- "राजन ! मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि इस घोर रात्रि में इतना कठिन परिश्रम आप क्यों कर रहे हैं ? आप को रत्नदीप नामक एक ऐसे युवक की कहानी सुनाता हूँ जो अनेक शास्त्रों का ज्ञाता होते हुए भी एक मुनि के शाप का शिकार हो गया। ध्यान से सुनिये, इससे मार्ग की थकावट को भूलने में सहायता मिलेगी।"

ऐसा कह कर बेताल कहानी सुनाने लगा-

दक्षिण पथ के एक गाँव में रहने वाला रत्नदीप नामक एक युवक काशी में अपनी शिक्षा पूरी करके वापस लौट रहा था। रास्ते के एक जंगल में एक मुनि पर उसकी दृष्टि पड़ी।

इस साधु को देख कर उसके मन में यह

बेताल कथा

विचार आया कि "अब तक जितने शास्त्रों का ज्ञान मैंने प्राप्त किया है, उससे कोई चमत्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन यदि किसी सिद्ध योगी-मुनि की कृपा हो जाये तो झट ऐसी विद्या प्राप्त हो सकती है। क्यों न इस मुनि की सेवा करके इन्हें प्रसन्न किया जाये और इनसे चमत्कार विद्या प्राप्त की जाये।"

मुनि समीप की एक कुटिया में अकेले रहते थे। इनका कोई चेला-चाटी नहीं था। वे पास के एक झरने पर से स्नान करके वापस लौट रहे थे। तभी रत्नदीप ने उनके पास आकर साष्टांग प्रणाम किया और अपना परिचय देकर अपनी मनोकामना प्रकट की। मुनि वात्सल्य भाव से मुस्कुरा कर चुप रह गये।

उस दिन से रत्नदीप मुनि के साथ रह कर उनकी सेवा करने लगा। उसने मुनि की छः महीनों तक निरन्तर सेवा की। किन्तु इस अवधि में मुनि ने उससे एक बार भी बात नहीं की। वे नित्य क्रिया से निबट कर प्रतिदिन अपनी कुटी के सामने के वृक्ष के नीचे बैठ ध्यान में डूबे रहते। रत्न दीप ने मुनि से कई बार प्रार्थना की कि वे एक-दो मंत्र सिखा दें। लेकिन मुनि मुस्कुरा कर चुप रह जाते।

धीरे-धीरे मुनि के प्रति रत्नदीप की भक्ति घटती गई और रोष बढ़ने लगा।

एक दिन जब मुनि ध्यान में डूबे हुए थे, रत्नदीप अपना धैर्य खो बैठा और मुनि को झक झोरता हुआ बोला- "मैं छः महीनों से आप की सेवा करता आ रहा हूँ, पर आपने एक दिन भी मुझसे बात नहीं की। और न आप के तप का अब तक कोई चमत्कार ही मैंने देखा है। मुझे इस पर भी सन्देह है कि आप सचमुच के भी मुनि हैं अथवा नहीं।"

इससे मुनि का ध्यान भंग हो गया। उन्होंने रत्नदीप को क्रोध भरी दृष्टि से देखते हुए कहा-

"अरे घमण्डी! तुम्हें अभी मालूम हो जायेगा कि मेरे तप में कितना बल है। तुम अपने निम्न स्वार्थ के लिए मेरे पास आ गये हो। लेकिन यह तो मानव मात्र का स्वभाव है, इसलिए इसके लिए मैं तुम्हें दोष नहीं देता। लेकिन इस समय तुमने मेरे साथ राक्षस की तरह

व्यवहार किया है। अतः मैं शाप देता हूँ कि तुम राक्षस बन जाओ। लेकिन तुममें राक्षस का बल नहीं होगा ताकि किसी को हानि न पहुँचा सको। यदि राक्षस जीवन में रहते हुए कोई पुण्य का काम करोगे तो पुनः मानव-जीवन प्राप्त हो जायेगा।"

दूसरे ही क्षण रत्नदीप ने देखा कि उसका शरीर राक्षस के समान बड़ा हो गया है और वह किसी और जंगल में पहुँच गया है, जहाँ न वह मुनि है और न उसकी कुटी।

रत्नदीप उसी जंगल में इधर उधर भटकने लगा।

एक दिन वीरसेन नाम का एक बहादुर और साहसी व्यक्ति देशाटन करता हुआ उस जंगल से गुजर रहा था। अचानक उसके सामने वह राक्षस पेड़ पर से कूद पड़ा और बोला- "अहा! यह कितना सुन्दर और मांस से भरा शरीर है! आज कितना भाग्यशाली हूँ मैं कि ऐसा भोजन मिला।"

लेकिन राक्षस को देख कर वीरसेन थोड़ा भी नहीं घबराया, बल्कि अपनी तलवार निकालता हुआ गरज कर बोला- "अपने को बचाने की कोशिश करो, वरना अभी तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े किये देता हूँ।"

राक्षस ठठा कर हँसता हुआ बोला- "तुम तो मेरे पाँव के अँगूठे के बराबर भी नहीं हो और इतना घमण्ड! चाहूँ तो अभी तुम्हारा कचूमर निकाल दूँ! लेकिन मामूली इनसान होकर इतनी हिम्मत रखते हो। सचमुच दाद देने लायक है तुम्हारा साहस! मैं तुम्हारी निडरता पर बहुत खुश हूँ। यदि तुम पलक झपकते ही भाग गये तो तुम्हें छोड़ दूँगा।"

लेकिन वीरसेन ने कभी भागना नहीं सीखा था। उसने उसी आवाज़ में फिर कहा- "तुम मुझे भले ही छोड़ दो, लेकिन मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।"

"तुम तो सचमुच में बहुत बहादुर हो। मैंने तो सोचा था कि तुम मेरी धमकी से डर जाओगे।"

"वास्तव में, मैं आकार में राक्षस हूँ लेकिन राक्षस की शक्ति मुझमें नहीं है। मैं इसलिए

बहादुर और साहसी व्यक्तियों का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। यदि कहीं कायर व्यक्ति मिले तो भरपेट भोजन करूँ।''

वीरसेन को यह जान कर आश्चर्य हुआ कि राक्षस में राक्षस की ताकत न हो। उसे राक्षस की बात पर दया आ गई। उसने इस रहस्य का कारण जानना चाहा।

राक्षस ने अपनी राम कहानी सुनाते हुए कहा- ''कभी मैं भी तुम्हारी तरह मानव था। लेकिन दुर्भाग्य वश किसी मुनि ने राक्षस बनने का शाप दे दिया। साथ में उन्होंने यह भी कहा कि मुझमें राक्षस का आकार और बुद्धि तो होगी लेकिन राक्षस की शक्ति नहीं रहेगी, जिससे किसी की मैं हांनि न कर सकूँ। इसलिए बहादूर और साहसी मेरे चंगुल में नहीं फँसते। हाँ, कहीं कोई कायर हो तो बताओ।''

''दुनिया में कायरों की क्या कमी ?'' वीरसेन ने कहा।

''लेकिन इस जंगल में जो भी हमसे मिलता है, हमसे सामना करने को तैयार हो जाता है। लगता है, हमारे शाप का रहस्य सब पर प्रकट हो गया है।'' राक्षस अपनी लाचारी प्रकट करता हुआ बोला।

''बत यह है कि केवल बहादुर और साहसी ही इस बियावान जंगल में आ सकते हैं। इसलिए ऐसे ही लोगों से तुम्हारी भेंट होती है। इस जंगल में भला कायरों का क्या काम ? यदि तुम्हें कायरों से मिलना हो तो ग्राम और नगर में चले जाओ।'' वीरसेन ने राक्षस को उपाय सुझाते हुए कहा।

राक्षस ने वीरसेन का धन्यवाद किया और वहाँ से गायब होकर एक गाँव में प्रकट हो गया।

वहाँ राक्षस की मुलाकात सबसे पहले जमुनादास नामक आदमी से हुई। राक्षस ने सोचा था कि जमुनादास उसे देख कर डर जायेगा। लेकिन वह बिल्कुल न डरा।

राक्षस ने अचरज से पूछा- ''क्या तुम्हें मुझसे डर नहीं लगा।

''डर काहे का ? मैं तो कई दिनों से अन्न के बिना भूखा तड़प रहा हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि

जितनी जल्दी मौत आ जाये, वही अच्छा है।" जमुनादास ने निराश होकर कहा ।

राक्षस ने भी निराश होकर पूछा- "अच्छा, यह बताओ, क्या यहाँ कोई भी कायर आदमी नहीं है ?"

"है क्यों नहीं ?" जमुनादास ने झट कहा। "विशालगुप्त तो मौत का नाम सुनते ही काँपने लगता है ।"

फिर क्या था। राक्षस का चेहरा खिल उठा और झट विशालगुप्त के पास पहुँच गया और गरज कर कहा- "आज बहुत दिनों पर मुझे भर पेट भोजन मिलेगा। अब मरने के लिए तैयार हो जा ।"

लेकिन विशालगुप्त ज्यों का त्यों लेटा रहा, ज़रा भी हिला-डुला नहीं। लेटे ही लेटे राक्षस को देख कर वह दर्द से कराहता हुआ बोला- "आओ आओ! मैं तुम्हारा ही इन्तज़ार कर रहा था। मैंने जीने की आशा से इतनी दवाइयाँ खाई परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। बल्कि पीड़ा बढ़ती गई। और अब तो दर्द सहना असम्भव हो रहा है। अच्छा हुआ तुम आ गये। मरने पर पीड़ा से मुक्ति तो मिल जायेगी ।"

राक्षस को विशालगुप्त से बड़ी आशा थी। लेकिन यहाँ भी उसकी दाल न गली और यह भी जीवन से निराश होकर मृत्यु से निडर हो गया है। उसने गहरी साँस लेकर पूछा- "क्या जीने का मोह रखने वाला यहाँ कोई नहीं है ?"

"मेरा इलाज करनेवाला वैद्यराज कमल नाथ मौत से निस्सन्देह डरता है। इतना ही नहीं, मेरा यह भी सन्देह है कि हमसे अधिक से अधिक धन ऐंठने के लिए ही मेरे रोग की सही दवा नहीं दे रहा है।" विशालगुप्त ने वैद्यराज पर अपना गुस्सा उतारते हुए कहा ।

राक्षस की अपनी भूख शान्त करने की आशा फिर जगी और तुरन्त वह कमलनाथ के कमरे में दाखिल हुआ ।

लेकिन राक्षस को बड़ी निराशा हुई क्यों कि वैद्य भी राक्षस को देख परेशान नहीं हुआ। पूछने पर पता चला कि वैद्यराज अपनी सारी कमाई अपनी पत्नी के लिए कर रहा था। एक दिन पहले उसकी पत्नी सारी सम्पत्ति लेकर मायके चली गई। इसलिए वैद्यराज भी निराश

होकर मरने को तैयार बैठे थे ।

राक्षस के पूछताछ करने पर वैद्यराज कमलनाथ ने कहा- "क्यों नहीं तुम गोवर्धन दास कंजूस के पास चले जाते हो ? उसके पास इतना पैसा है कि वह उसे छोड़ कर कभी नहीं मरना चाहेगा । उसे खाकर अपना पेट भर लेना ।"

राक्षस ने सोचा- "क्यों न इससे अपने लिए कुछ पुण्य कर्म करवा लें, जिससे जल्दी ही राक्षस के जीवन से मुक्ति मिल जाये ।" इसलिए उसने गोवर्धन दास से कहा- "यदि तुम मेरे नाम पर मन्दिर में चार दिनों तक पूजा-पाठ करो तो मैं तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ूँगा ।"

"मैं ऐसा कोई काम नहीं करना चाहता जिसमें एक फूटी कौड़ी भी खर्च हो ।" गोवर्धन ने दृढ़ होकर कहा ।

"फिर मैं तुम्हें जिन्दा खा जाऊँगा ।" यह कहते हुए राक्षस ने धमकी दी ।

"चाहे जान ही क्यों न चली जाये, मगर मैं एक फूटी कौड़ी भी नहीं जाने दूँगा ।" गोवर्धन ने निडरता-पूर्वक कहा ।

अब राक्षस गोवर्धन दास का भी कुछ बिगाड़ नहीं सकता था क्यों कि कंजूसी ने उसे भी निर्भय बना दिया था ।

राक्षस ने सोचा कि अब उसे यहाँ न उसका पेट भरेगा और न मुक्ति मिलेगी, इसलिए वह किसी और गाँव के लिए चल पड़ा ।

जब वह गाँव की सीमा पहुँचा तो उसने देखा कि जमुना दास खुशी से उछल-कूद रहे हैं । राक्षस ने उससे खुशी का कारण पूछा ।

जमुना दास राक्षस को देखते ही थर-थर काँपता हुआ बोला- "कृपा करके मुझे छोड़ दो और मेरी जान न लो । मैं अब कुछ दिनों तक जीना चाहता हूँ । विशाल गुप्त मुझे अपना दत्तक बनाना चाहते हैं, क्यों कि वे अब अधिक दिनों तक नहीं जी पायेंगे । यह सब तुम्हारे दर्शन से ही, हुआ है ।"

असली बात की जानकारी करने के लिए राक्षस विशाल गुप्त के घर पहुँचा । विशाल गुप्त भी इसे देख कर नख से शिख तक काँप उठा और कहा ।

"मैं नहीं जानता कि वैद्यराज कमल नाथ

पर तुमने कैसा जादू किया। वह थोड़ी देर पहले मुझे एक गोली दे गया है ! उसे खाते ही मेरी सारी पीड़ा जाती रही। इसलिए अब मैं जीवित रहना चाहता हूँ। कृपया थोड़े दिन मुझे जीने दो।"

इसके बाद राक्षस सचाई जानने के लिए कमलनाथ के घर पहुँचा। पूछने पर पता चला कि जैसे ही विशाल गुप्त को वह दवा देकर लौटा, उसकी पत्नी भी लौट आई और कमलनाथ से उसने माफी माँगी। इसलिए अब वैद्यराज में भी जीने का मोह हो गया और राक्षस से डरता हुआ उससे प्राणों की भीख माँगने लगा।

लेकिन तभी एकाएक राक्षस रत्नदीप में बदल गया।

बेताल ने यह कहानी सुना कर पूछा- "राजन ! राक्षस साहसी और बहादुर लोगों को हानि नहीं पहुँचा सकता था। लेकिन कायर और डरपोक लोगों को खाकर पेट भरना चाह कर भी अन्त में जमुना दास, विशाल गुप्त और कमलनाथ को क्यों छोड़ दिया ? साथ ही, जब मुनि ने शाप देते समय यह कहा था कि कोई धर्म-पुण्य का काम करने से रत्नदीप राक्षस के जीवन से मुक्त हो जायेगा, तो फिर बिना किसी पुण्य कार्य के वह राक्षस के जीवन से कैसे मुक्त हो गया ?

इस सन्देह का समाधान जान कर भी न देंगे तो आप का सिर फूट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।

इस पर विक्रम ने उत्तर देते हुए कहा- रत्नदीप शाप के कारण राक्षस हो गया था। उसे बराबर शाप और मानव जीवन की घटना याद थी और इससे मुक्त होने के लिए प्रयत्नशील भी था। उसमें राक्षस की शक्ति नहीं थी, इसीलिए उसमें राक्षस की क्रूरता भी नहीं थी। इसीलिए जब उसे मौका भी मिला तब भी उसने क्रूरता नहीं की।

उसने तीनों मानवों को न मार कर बहुत बड़ा पुण्य कार्य किया था। यह किसी भी धर्म कार्य या पूजा पाठ से बढ़ कर पुण्य का काम था। इसीलिए वह राक्षस से पुनः मनुष्य बन गया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(—कल्पित)

कला का आदर

पर्वत पुर का जमीन्दार कवियों और कलाकारों से घृणा करता था। वह कहा करता था कि कविता करने वालों को कारागार में भेज देना चाहिए। यदि कोई गायक अपना मधुर गीत सुनाने की इच्छा प्रकट करता तो वह अपने को बन्द कर लेता।

उस जमीन्दार का दीवान इस बात से चिन्तित था कि कला के प्रति इस दृष्टिकोण के कारण अन्य जमीन्दारों की नज़र में इनका आदर घट रहा है।

एक दिन जमीन्दार ने दीवान से कहा- "कहीं से किसी कुशल चित्रकार को ढूँढ कर मेरे पास भेजो।"

जमीन्दार के अन्दर यह परिवर्तन देख दीवान को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने एक प्रसिद्ध चित्रकार को यह समझाते हुए जमीन्दार के पास भेजा- "हमारे जमीन्दार साहब के पास जानेवाले तुम पहले कलाकार हो। कला के प्रति उनका आदर बढ़े, यह तुम्हारी जिम्मेदारी है।"

एक घण्टे के बाद चित्रकार लौटकर दीवान से बोला- "जो लोग यह कहते हैं कि आप के जमीन्दार साहेब कला प्रेमी नहीं हैं, वे निरे गँवार हैं। उन्होंने घण्टा भर मुझसे अपने पुरखों के पुराने चित्रों पर लगे मकड़ी के जाले साफ करवाये। वे मेरे साथ रह कर काम की देख भाल करते रहे और मेरे काम के बदले अच्छा इनाम भी दिया।

यह समाचार सुन कर दीवान को बड़ा आश्चर्य हुआ।

जगत की रीत

धरमदास बहुत मेहनती और ईमानदार था। दिन भर कड़ी मेहनत से जो कुछ मिलता, उसी से अपना पूरा परिवार पालता।

इसका परिवार बहुत बड़ा था। चार बेटियों और चार बेटों की परवरिश के लिए इसकी कमाई बहुत कम थी। लड़के अभी छोटे-छोटे थे लेकिन सभी बेटियाँ विवाह के योग्य हो गई थीं।

जैसे ही धरमदास मजदूरी करके घर वापस लौटता, उसकी पत्नी पार्वती लड़कियों की शादी की बात छेड़ देती। शादी की बात सुनते ही धरमदास का रोम-रोम काँप उठता। सोचने लगता- ''यहाँ तो दो जून रोटी के लाले पड़ रहे हैं- चार-चार बेटियों की शादी का क्या होगा।'' सोचते-सोचते आखिर सब कुछ भगवान भरोसे छोड़ कर रात को सो जाता।

इनके बेटे, अपने पिता की चिन्ता देख कर अपनी बहनों के लिए कुछ करना चाहते थे। धरम दास ने इन्हें अभी काम करने से मना किया। किन्तु इन्होंने पिता की बात पर ध्यान नहीं दिया और ये भी उनके साथ मेहनत-मजदूरी करने चल पड़े।

धरमदास के मकान के पिछवाड़े में एक नीम के पेड़ पर कुल देवी और कुल देवता रहते थे। एक दिन कुल देवता ने कुल देवी से कहा- ''हमलोग कितने अरसे से इस पेड़ के आश्रय में रह रहे हैं। किन्तु इस दरिद्र धरमदास की कोई सहायता आज तक नहीं की।''

यह बात सुन कर कुल देवी बोली- ''तुम ठीक कहते हो। किसी जमाने में यह परिवार बहुत सुखी हुआ करता था। किन्तु वक्त बदल जाने से अब कितने दुखी हो गये हैं। हमें इनकी सहायता अवश्य करनी चाहिये। लेकिन सहायता किस प्रकार की जाये ?''

कुल देवता ने सुझाव देते हुए कहा- ''हमलोगों को कहीं से थोड़ा धन लाकर ऐसी

जगह रख देना चाहिये जहाँ पर इनकी नज़र पड़ सके । अभी इन्हें कुछ रुपयों की सख्त आवश्यकता है। यदि इन्हें कुछ धन मिल जाये तो बेटियों की शादी में सहायता मिल जायेगी।"

कुल देवी इस बात से सहमत हो गई । इसके बाद आधी रात के समय दोनों ने धन की गठरी लाकर घर के पिछवाड़े में कुएं के पास रख दिया ।

सवेरे नींद खुलने पर जब धरमदास की पत्नी कुएं पर गई तो गठरी पर उसकी नज़र पड़ गई। उत्सुकता के कारण जब उसने गठरी खोल कर दखी तो वह खुशी और आश्चर्य से उछल पड़ी। उसमें ढेर सारे सोने की मुद्राएं थीं । उसने दौड़ कर धरमदास को बुलाया। वह भी आनन्द से नाचने-उछलने लगा। शोर सुन कर बेटों-बेटियों की भी नींद खुल गई और वे सब भी अचानक धन पाकर खुशी में पागल-से हो गये ।

सबसे पहले धरम दास के सबसे बड़े बेटे ने कहा- "पिता जी ! हम इस धन से बड़े पैमाने पर व्यापार करेंगे जिससे सदा के लिए हमलोगों की गरीबी दूर हो जाये।" इस पर दूसरे बेटों ने कहा- " नहीं, यह सब सम्भव नहीं । हमलोगों को व्यापार करना आता नहीं । सारा धन यों ही नष्ट हो जायेगा। हमें सबसे पहले अच्छे अच्छे कपड़े बनवाने चाहिए। और फिर नगर में जाकर विद्या ग्रहण करनी चाहिए ।"

बेटों की बात सुन कर पार्वती ने उन्हें डाँटते हुए कहा- "तुम लोग बच्चों की तरह बातें कर रहे हो। सारी जिन्दगी मैं अच्छे गहनों के लिए तरसती रही, लेकिन गरीबी में कभी यह मौका ही न मिला। इसलिए मैं इन सब पैसों के गहने बनवाऊँगी । गहने बनवाने से ये पैसे ज्यों के त्यों सुरक्षित भी रहेंगे। बाकी चीजों में पैसे यों ही बर्बाद हो जाते हैं ।"

लेकिन यह बात धरमदास को पसन्द नहीं आई। उसने सबको चुप कराते हुए कहा- "इस धन से सबसे पहले एक अच्छा सा मकान बनायेंगे । फिर थोड़ा-सा खेत खरीदेंगे । तभी हमलोग गाँव में इज्ज़त के साथ रह सकते हैं । अभी तो हमें मजदूर से अधिक कोई नहीं समझता। प्रतिष्ठा के साथ हने के लिए जरूरी है कि अपना एक सुन्दर भवन हो और कुछ खेत

हो। इसलिए तुमलोग सब इस पैसे की बात भूल जाओ। बाद में उन बातों पर विचार किया जायेगा ।

धरम की दास बेटियों ने सबके मन की बातें सुनीं । यद्यपि इनके मन में अपने विवाह के लिए व्याकुलता थी, लेकिन इन्होंने अपनी कोई इच्छा ज़ाहिर नहीं की। ये चुपचाप मन दबा कर रह गईं ।

नीम के पेड़ पर से कुल देवी और कुल देवता यह तमाशा देख रहे थे। उन्हें धरमदास, उसकी पत्नी तथा उनके बेटों का व्यवहार बहुत विचित्र लगा । कुल देवता ने कुल देवी से कहा- "देख रही हो न ? सब की कैसी-कैसी कामनाएं हैं ! धन देखते ही सब की सोयी इच्छाएं जाग गईं। बाप, बेटे सभी अपने-अपने मन के लड्डू बनाने लगे । किसी ने भी लड़कियों के विवाह के बारे में नहीं सोचा। यहाँ तक कि माँ भी अपनी बेटियों की चिन्ता छोड़ अपने गहनों के शौक पूरा करने लगीं। जब पैसे नहीं थे तो सबके जबान पर एक ही बात थी-लड़कियों की शादी। लेकिन पैसे आते ही सब के मन फिर गये ।"

कुल देवी ने भी चिन्ता प्रकट करते हुए कहा- "हाँ, हाँ, यह सब धन की महिमा है। जब ये दुख में थे तब आपस में प्रेम और सहानुभूति थी और सभी दूसरों के सुख की चिन्ता करते थे। लेकिन जैसे ही सुख की आशा हुई कि ये सब अपने अपने स्वार्थ के लिए चिन्तित हो उठे ।"

थोड़ी देर चुप रहने के बाद कुछ सोच कर

वह फिर बोली- "अच्छ देखो ! मैं एक तमाशा करती हूँ ।"

इधर धरमदास, उसकी पत्नी और बच्चे तब तक अपनी-अपनी बात को लेकर झगड़ने लग पड़े ।

इसी बीच गठरी के सारे सिक्के देखते-देखते कंकड़-पत्थर बन गये । सब की नज़र गठरी पर ही लगी हुई थी । जैसे ही उन लोगों ने देखा कि सोने की मुद्राएं कंकड़-पत्थर बन रही हैं, वे हक्का-बक्का हो उन्हें उलट-पुलट कर देखने लगे ।

पार्वती तो छाती पीट कर रोने चिल्लाने लगी और कहने लगी- "हाय ! यह तो पहले से ही पत्थर था । हम तो धोखे में पड़ कर इसे सोना समझ बैठे थे । लगता है किसी ने हमारी नज़र में जादू-टोना कर दिया है ।"

फिर संभल कर थोड़ी देर बाद बोली- "हमलोग व्यर्थ ही इस पत्थर के लिए लड़ने-झगड़ने लगे और अपनी-अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए सोचने लगे । हमलोगों में से किसी ने भी इन लड़कियों की शादी के बारे में नहीं सोचा । घर में चार-चार जवान बेटियाँ विवाह के लिए पड़ी हैं, लेकिन सब को अपनी-अपनी पडी थी । हमलोग भी कितने स्वार्थी निकले !"

लड़कियों को चुपचाप एक कोने में खड़ी देख कर धरमदास का माथा शर्म से झुक गया और पछताता हुआ बोला- "तुम ठीक कहती हो पार्वती ! हम स्वार्थ में अन्धे- हो गये थे ।"

बेटों ने भी लज्जा से सिर झुकाते हुए कहा- "सचमुच हमारी बुद्धि मारी गयी थी । बिना पसीने से आये धन ने हमें अन्धा बना दिया था । हम सब का सबसे पहला धर्म इन बहनों का विवाह होगा और हम सब परिश्रम से इस के लिए धन कमायेंगे ।"

नीम के पेड़ पर बैठे कुल देवी और कुल दवता यह सब सुन कर प्रसन्न हुए और इस बात पर उन्हें सन्तोष हुआ कि उन सबको अपने कर्तव्य का बोध हो गया है और फिर से उनमें प्रेम और एकता आ गई है ।

चेतावनी

एक बार काशी राज्य के एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था । वह भिक्षाटन से अपनी जीविका चलाता था ।

एक बार किसी गाँव में से भिक्षाटन करके वह लौट रहा था । मार्ग में उसे ये शब्द सुनाई पड़े- ''हे ब्राह्मण ! यदि आज शाम तक अपने घर नहीं पहुँचे तो तुम्हारी मौत निश्चित है । और यदि पहुँच गये तो तुम्हारी पत्नी की मौत निश्चित है ।''

ब्राह्मण ने डरते हुए इधर-उधर देखा, परन्तु वहाँ कोई नहीं था । जब वहाँ कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दिया तब उसने सोचा कि या तो यह किसी देव की वाणी है या किसी यक्ष आदि की चेतावनी है ।

भय से काँपते हुए पहले तो वह तेजी से घर जाने लगा लेकिन यह सोच कर और भी डर गया कि घर जाने पर पत्नी के प्राण चले जायेंगे । वह दुविधा में था कि क्या करे, क्या न करे । वह इसी भय, शंका और दुविधा की अवस्था में चलता-चलता नगर पहुँच गया ।

उन्हीं दिनों बोधिसत्व ने अपने एक जन्म में सेनक नामक साधु का जीवन पाया था । ये स्थान-स्थान पर लोगों को एकत्र कर उपदेश दिया करते थे । एक दिन वे उसी प्रकार नगर के एक स्थान पर लोगों को प्रवचन दे रहे थे । बड़ी संख्या में लोग बड़ी श्रद्धा-भक्ति से उनके उपदेश सुन रहे थे ।

ब्राह्मण उसी मार्ग से गुजर रहा था जहाँ बोधिसत्व उपदेश दे रहे थे । वह भी साधु का उपदेश सुनने लगा । अपने प्राणों के भय से, वह, परेशान होने के कारण, साधु का प्रवचन ध्यान से नहीं सुन सका । किन्तु वह बराबर साधु की ओर एकटक देखता रहा ।

उपदेश खत्म होने पर श्रोताओं ने साधु को साधुवाद दिया और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट

करके जाने लगे। किन्तु वह ब्राह्मण बुत की तरह वहीं खड़ा रहा।

जब बोधिसत्व की नज़र ब्राह्मण पर पड़ी तो उन्होंने संकेत से उसे अपने पास बुलाया। ब्राह्मण ने उन्हें सिर झुका कर प्रणाम किया।

ब्राह्मण के चेहरे पर भय और शंका साफ दिख रही थी। बोधिसत्व समझ गये कि इसे कोई भारी कष्ट है। उन्होंने करुणा भरे शब्दों में पूछा- "वत्स ! बताओ तुम्हें क्या कष्ट है ?"

ब्राह्मण ने आँखों में आसूँ भर के जंगल के मार्ग में जो घटना घटी थी, सब सुना दी।

पूरी घटना ध्यान से सुनने के बाद बोधिसत्व ने प्रश्न किया- "वह अशरीरी वाणी जब सुनाई पड़ी तो उसके पूर्व तुम क्या कर रहे थे ?"

"उसके पहले एक पेड़ के नीचे बैठ कर अपनी थैली में से खाना निकाल कर खा रहा था।" ब्राह्मण ने उत्तर दिया।

"खाना खाने के बाद तुमने पानी कैसे पीया ? तुम्हारे पास जल का कोई पात्र तो नहीं हैं" बोधिसत्व ने फिर सवाल किया।

"उस जंगल में पास ही एक झरना था। खाना खाकर उसी झरने पर जाकर मैंने पानी पीया।" ब्राह्मण ने उत्तर दिया।

"क्या थैली में जितना खाना था, तुमने सब खा लिया या उसमें कुछ खाना बचा रहा ?" बोधिसत्व ने पूरी जानकारी लेनी चाही।

ब्राह्मण ने पूरी बात बताते हुए कहा- "थैली में रखे भोजन का मैंने आधा हिस्सा ही खाया था। आधा भोजन तो अभी भी उसी में पड़ा है।"

बोधिसत्व ने आगे की बात को विस्तार से जानने के लिए पुनः पूछा- "तुम जब अपनी प्यास बुझाने के लिए झरने पर गये थे तो उस समय भोजन की थैली अपने साथ ले गये या पेड़ के नीचे ही छोड़ कर गये थे ?"

"पेड़ के नीचे ही छोड़ दिया था।" ब्राह्मण ने उत्तर दिया ।

"क्या थैली का मुँह बन्द करके गये थे या खुला छोड़ कर ? यदि खुला छोड़ कर गये तो कब बन्द किया था उसे ?" बोधिसत्व घटना की बारीकी में जानना चाहते थे ।

ब्राह्मण बहुत सोचने के बाद याद करता हुआ बोला- "हाँ हाँ याद आया। पानी पीकर आने के बाद ही मैंने थैली का मुँह बन्द किया था।"

"अच्छा, अब यह बताओ कि जब तुमने थैली का मुँह बन्द किया, तब थैली के अन्दर झाँक कर देखा था ?" बोधिसत्व प्रश्न पर प्रश्न कर रहे थे ।

ब्राह्मण फिर सोचने लगा। सोच कर बोला- "नहीं श्रीमान् ! ऐसा तो नहीं किया था।"

"थैली बाँधने के बाद पेड़ के नीचे कुछ देर आराम किया या तुरत वहाँ से रवाना हो गये ?"

"नहीं महात्मन् ! मैं थैली बाँध कर तुरत वहाँ से चल पड़ा।"

"और कितनी दूर चलने के बाद वह वाणी सुनाई दी ? उठ कर चलते ही या कुछ दूर जाने के बाद ?"

"उठ कर चलते ही ।"

बोधिसत्व चुप हो गये और आँखें बन्द कर

लीं और बहुत देर तक ध्यान में रहे। ध्यान में उन्होंने सारी घटना पर फिर से विचार किया और यह जानने का प्रयास करते रहे कि किस समय क्या-क्या सम्भावना हो सकती है और चेतावनी देने वाले की वाणी से किस घटना का सम्बन्ध अधिक निकट का हो सकता है।

अपने ध्यान में पूरी घटना की बड़ी बारीकी के साथ जाँच करने के बाद बोधिसत्व ने समझाते हुए ब्राह्मण से कहना शुरु किया—"पेड़ के नीचे से जब तुम चले, तभी कोई घटना घटी, जिसे किसी ने देखा। इसी घटना का सम्बन्ध तुम्हारी और तुम्हारी पत्नी की मौत से है। हो सकता है कि जब तुम थैली का मुँह खुला छोड़ कर पानी पीने गये थे, उस समय तुम्हारी थैली में सर्प चला गया हो। वापस आने पर थैली में झाँके बिना थैली का मुँह बन्द कर दिया। इससे सर्प थैली के अन्दर बन्द हो गया। जिसने भी इस घटना को देखा, उसने यह सोचा कि शाम तक यदि घर तुम नहीं पहुँचे तो बचा हुसा भोजन खाने के लिए थैली में हाथ डालोगे इससे सर्प डँस लेगा और तुम्हारी मौत हो जायेगी। यदि तुम घर पहुँच गये तो तुम्हारी पत्नी ही थैली को खोलेगी और सर्प उसे डँस लेगा। इस प्रकार हर हालत में किसी एक की, जो भी थैली को खोलेगा, मृत्यु निश्चित होगी।"

इतना कहते हुए बोधिसत्व ने अपने आसन के पास ब्राह्मण की थैली रखने के लिए कहा। उसी समय भीड़ में से एक सँपेरा आया और उसने थैली का मुँह खोल दिया। थैली का मुँह खुलते ही थैली के अन्दर से एक नाग फुत्कारता हुआ बाहर आ गया। सँपेरे ने उसे पकड़ लिया।

ब्राह्मण यह सब देख कर दंग था। वह साधु की तेज़ बुद्धि पर चकित था। उसके चेहरे पर से डर और शंका की छाया हट चुकी थी।

बोधिसत्व मुस्कुराते हुए ब्राह्मण से बोले- "अब आप निर्भय और निश्चिन्त होकर घर जाइए। अब किसी की मौत का कोई खतरा नहीं रहा।"

ब्राह्मण बोधिसत्व के प्रति कृतज्ञता का भाव लिए अपने घर की ओर चल पड़ा।

स्पारको का साहसिक कार्य-II

जंगल के साधू ने सन्दीप को एक जादू की अंगूठी दी है. जब सन्दीप अंगूठी को घुमाकर कहता है "स्पारको आ जाओ" वह स्पारको बन जाता है. (स्पारको के साहसिक कार्य-1 पढ़िये)

"स्पारको आ जाओ स्पारको स्पारको"

स्पारको तुम रोशनी से तेज़ रफ्तार से दौड़ सकते हो और झट से वहीं पहुँच सकते हो जहाँ तुम्हारी ज़रूरत हो. तुम्हारा हेलमेट प्रोजेक्टर है. बटन दबाने से तुम्हें सारा दृश्य दिखेगा.

मेरी ज़रूरत है रोहित, तुम मेरे भेद को सुरक्षित रखो– अलविदा.

वूश– स्पार्को आ पहुँचा.

आयेशा, जल्दी अपना दुपट्टा दूर फेंक दो.

दुपट्टा जल गया, पर भगवान का शुक्र है कि तुम सही सलामत हो. आयेशा खाना बनाते समय कभी भी ढीले लहराते कपड़े नहीं पहनते.

अपने पिता से इस शेल्फ को वहाँ से हटाने को कहो. चूल्हे के ऊपर या पीछे शेल्फ नहीं रखते. यह खतरनाक चीज़ है.

अभी तो स्पार्को यहीं पर था और अभी अदृश्य हो गया.

इस बीच शहर के दूसरे भाग में प्रीति तथा कमल अपने खाना बनाने की परीक्षा की तैयारी कर रही हैं.

मैंने चने के लिये मसाला भी पीस लिया है. पाँच मिनट में इसे भून कर चने मिला दूँगी. तुम पूरियाँ बेलना शुरू करो.

कमल दीदी, हम अपनी परीक्षा शीघ्र ही समाप्त कर देंगे. आधे घंटे में मैंने आटा गूंध लिया और चने बना लिये.

ओफ ओ ! आँच धीमी हो गयी है. थोड़ा स्टोव में पम्प मारना होगा.

इस स्टोव को तो बहुत पम्प मारना पड़ता है.

कमल दीदी माँ कहती हैं अधिक पम्प नहीं मारना.

पूरियाँ ठीक से नहीं फूलेंगी जब तक आँच का सेक ठीक ना हो– देखो, घासलेट स्टोव से बाहर निकल रहा है.

BEEP BEEP

वुश !
स्पार्को आ गया बचाने.
भागो रवी फायर-ब्रिगेड को बुलाओ. प्रीती तुम जल्दी से घासलेट के डब्बे को दूर ले जाओ.

बाल बाल बच गयी कमल– घासलेट के स्टोव को अधिक पम्प नहीं करते. स्टोव को ऊँची पट्टी पर रखना चाहिये. फिर कभी ऐसे न करना.

धन्यवाद, आप कौन हैं ?
मैं स्पार्को हूँ.

मालती खाना बनाने की परीक्षा की तैयारी में जुटी हुई है.

मैं खाना पसंद करती हूँ लेकिन मुझे परीक्षा अच्छा नहीं लगता. मैंने गृह रसायन क्यों सीखा !

शीरा बीस मिनट - भरता बीस मिनट - समोसे बनाना बीस मिनट केवल बीस मिनट बचे हैं उन्हें तलने के लिए.

स्पारको का साहसिक कार्य-II

रसायन शिक्षा

जंगल के साधू ने सन्दीप को एक जादू की अंगूठी दी है. जब सन्दीप अंगूठी को घुमाकर कहता है "स्पारको आ जाओ" वह स्पारको बन जाता है. (स्पारको के साहसिक कार्य-1 पढ़िये)

"स्पारको आ जाओ स्पारको स्पारको"

स्पारको तुम बिजली से तेज़ रफ़्तार से दौड़ सकते हो और भर में वहीं पहुँच सकते हो जहाँ तुम्हारी ज़रूरत हो. तुम्हारा हेलमेट प्रोजेक्टर है. बटन दबाने से तुम्हें सारा दृश्य दिखेगा.

मेरी जरूरत है रोहित. तुम मेरे भेद को सुरक्षित रखो–अलविदा.

बूश–
स्मार्की
आ पहुँचा.

आयेशा, जल्दी
अपना दुपट्टा दूर फेंक दो.

दुपट्टा जल गया, पर भगवान का शुक्र है कि तुम सही सलामत हो. आयेशा खाना बनाते समय कभी भी ढीले लहराते कपड़े नहीं पहनते.

अपने पिता से इस शेल्फ को वहाँ से हटाने को कहो. चूल्हे के ऊपर या पीछे शेल्फ नहीं रखते. यह खतरनाक चीज़ है.

अभी तो स्मार्की यहीं पर था और अभी अदृश्य हो गया.

इस बीच शहर के दूसरे भाग में प्रीति तथा कमल अपने खाना बनाने की परीक्षा की तैयारी कर रही हैं.

कमल दीदी, हम अपनी परीक्षा शीघ्र ही समाप्त कर देंगे. आधे घंटे में मैंने आटा गूँध लिया और चने बना लिये.

मैंने चने के लिये मसाला भी पीस लिया है. पाँच मिनट में इसे भून कर चने मिला दूँगी. तुम पूरियाँ बेलना शुरू करो.

ओफ ओ! आँच धीमी हो गयी है. थोड़ा स्टोव में पम्प मारना होगा.

इस स्टोव को तो बहुत पम्प मारना पड़ता है

कमल दीदी माँ कहती हैं अधिक पम्प नहीं मारना.

पूरियाँ ठीक से नहीं फूलेंगी जब तक आँच का सेंक ठीक ना हो - देखो, घासलेट स्टोव से बाहर निकल रहा है.

ढढढढ!

BEEP BEEP

वूश! स्पार्को आ गया बचाने.
भागो रवि फायर-ब्रिगेड को बुलाओ. प्रीती तुम जल्दी से घासलेट के डब्बे को दूर ले जाओ.

बाल बाल बच गयी कमल - घासलेट के स्टोव को अधिक पम्प नहीं करते. स्टोव को ऊँची पट्टी पर रखना चाहिये. फिर कभी ऐसे न करना.
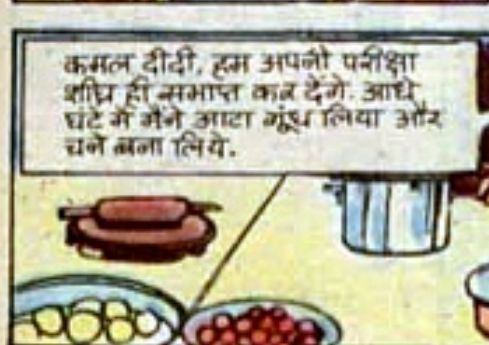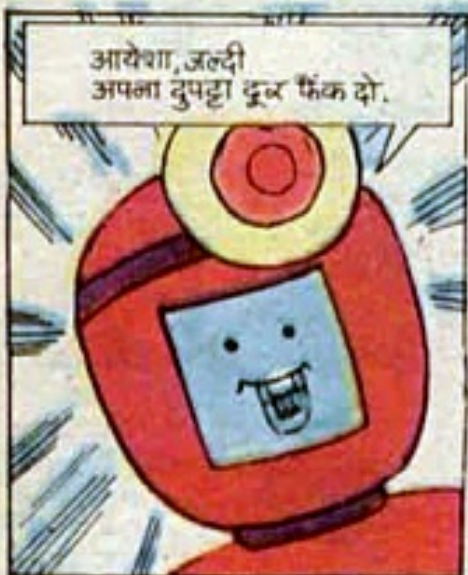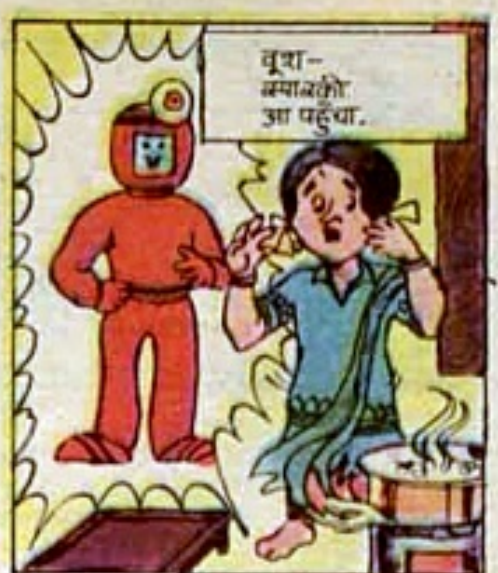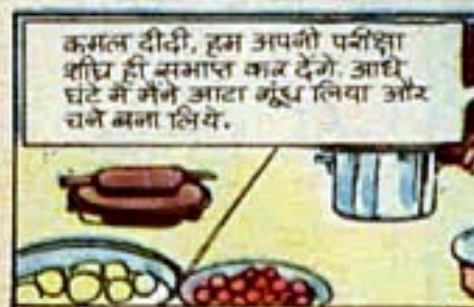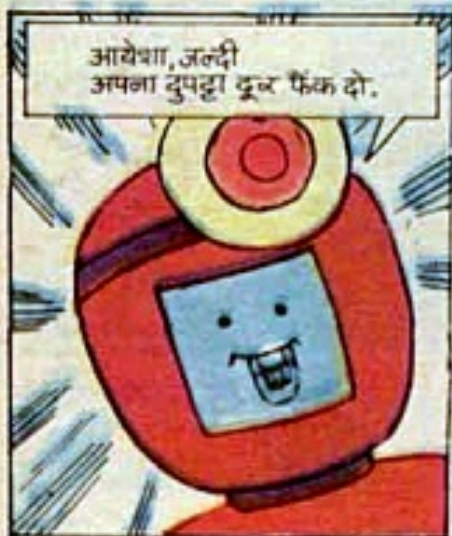
मैं स्पार्को हूँ.
धन्यवाद. आप कौन हैं?

मालती खाना बनाने की 'परीक्षा' की तैयारी में जुटी हुई है.

मैं खाना पसंद करती हूँ लेकिन मुझे पकाना अच्छा नहीं लगता. मैंने गृह रसायन क्यों लिया?

छीलना बीस मिनट - भरना बीस मिनट - समोसे बनाना बीस मिनट केवल बीस मिनट बचे हैं उन्हें तलने के लिए.

कूपन

सेवा में : लॉस प्रीवेन्शन असोसिएशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड,
वार्डन हाउस, सर. पी. एम. रोड, बम्बई-४०० ००१.

कृपा मुझे एक स्पारको स्टिकर भेजीए.

मेरा नाम है ....

मेरा पूरा पता है ....

....

....

....

....

आग बचाने और रोकने के हित में
लॉस प्रीवेन्शन असोसीएशन ऑफ इन्डिया लिमिटेड.
द्वारा प्रकाशित.

maa (n) 575/83 HIN

छत्रपति शिवाजी

मुगल साम्राज्य को जड़ से हिला देने वाले वीर शिवाजी का जन्म सन् १६२७ ई० में हुआ था। इनके पिता बाजी बीजापुर के सुलतान के दरबार में जागीरदार थे। इनका बचपन पूना में माता जीजाबाई और उनके पारिवारिक मित्र दादाजी की देखरेख में बीता।

बचपन से ही इनके अद्भुत साहस और पराक्रम का परिचय मिलने लगा। वीरता के कारण निकटवर्ती पहाड़ी जाति के मावली लोग इनका आदर करने लगे और धीरे-धीरे उन्हें अपना नेता मानने लगे।
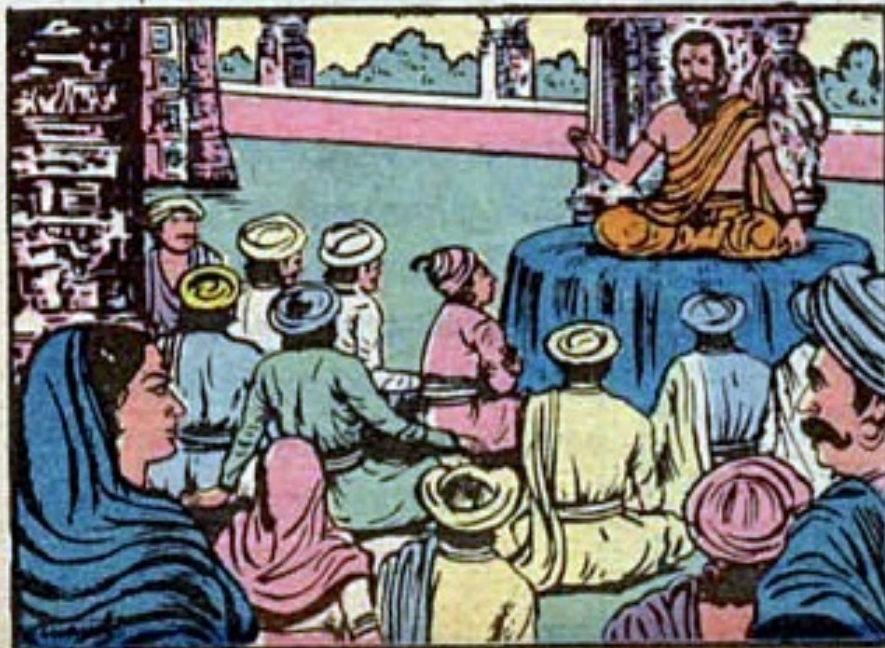
वीर और पराक्रमी होने पर भी शिवाजी में लेश मात्र भी घमण्ड न था। धर्मों के प्रति इनकी निष्ठा अटूट थी। उस युग में जनता के बीच एकता और धार्मिक लगन पैदा करने वाले महान संत रामदास इनकी श्रद्धा और भक्ति के केंद्र थे।

कुछ ही दिनों में शिवाजी ने एक छोटी-सी सेना का संगठन किया। उनकी मदद से शिवाजी ने बीजापुर के निकटवर्ती दुर्गों और किलों पर अधिकार करना शुरु किया। यह खबर पाकर बीजापुर के सुलतान ने अपने सेनापति अफजल खाँ को शिवाजी को दबाने के लिए भेजा।

शिवाजी के सैनिकों ने अफजल खाँ की सेना को अपार क्षति पहुँचाई। आखिर अफजल खाँ एक एकान्त प्रदेश में शिवाजी से बात चीत करने को राजी हो गया। पहले से निश्चित स्थान पर दोनों एक-दूसरे के आमने-सामने आये।

अफजल खाँ ने हाथ बढ़ा कर शिवाजी के साथ- आलिंगन करने का बहाना करके उनका गला घोंटने का प्रयत्न किया। लेकिन इस खतरे की कल्पना करके शिवाजी उसका सामना करने के लिए पहले से ही तैयार थे। अपने हाथ में छिपाये बघनखे से उन्होंने अफजल खाँ का पेट फाड़ डाला।

शिवाजी मुगल साम्राज्य के सीमावर्ती प्रदेशों पर अधिकार करते चले गये। यह खबर पाते ही औरंगज़ेब ने अपने सेनापति शाइस्ता खाँ को शिवाजी को दबाने के लिए भेजा। शाइस्ता खाँ ने महाराष्ट्र के अनेक दुर्गों पर फिर से अधिकार कर लिया और अन्त में शिवाजी की राजधानी पूना पर भी कब्जा कर लिया। एक दिन रात को एक बरात जा रही थी। शिवाजी अपने कुछ सिपाहियों के साथ बराती बन कर उसमें शामिल हो गये और शाइस्ता खाँ के शिविर की ओर पहुँच गये।
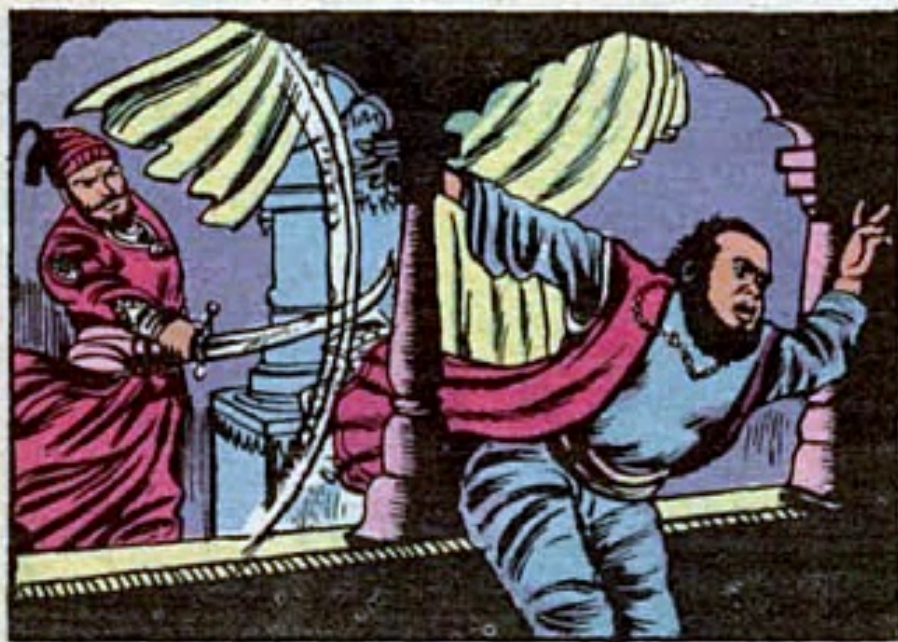
शिवाजी ने अचानक शाइस्ता खाँ के शिविर पर हमला कर दिया। वे तलवार लिए शाईस्ता खाँ के कमरे में घुस पड़े। शाइस्ता खाँ खिड़की के रास्ते भाग गया लेकिन भागने की कोशिश में शिवाजी के हमले से उसके हाथ की तीन उंगलियाँ कट गईं।

इसके बाद औरंगज़ेब की ओर से जय सिंह शिवाजी के साथ समझौते का प्रयत्न करने लगे। समझौते के लिए बातचीत करने के लिए हर तरह की सुरक्षा का प्रबन्ध कर जय सिंह ने शिवा जी को आगरे में निमंत्रित किया। शिवाजी अपने पुत्र शम्भोजी के साथ आगरा पहुँचे। वहाँ पर उनके प्रति उचित व्यवहार नहीं किया गया, जिससे वे विद्रोही बन बैठे।
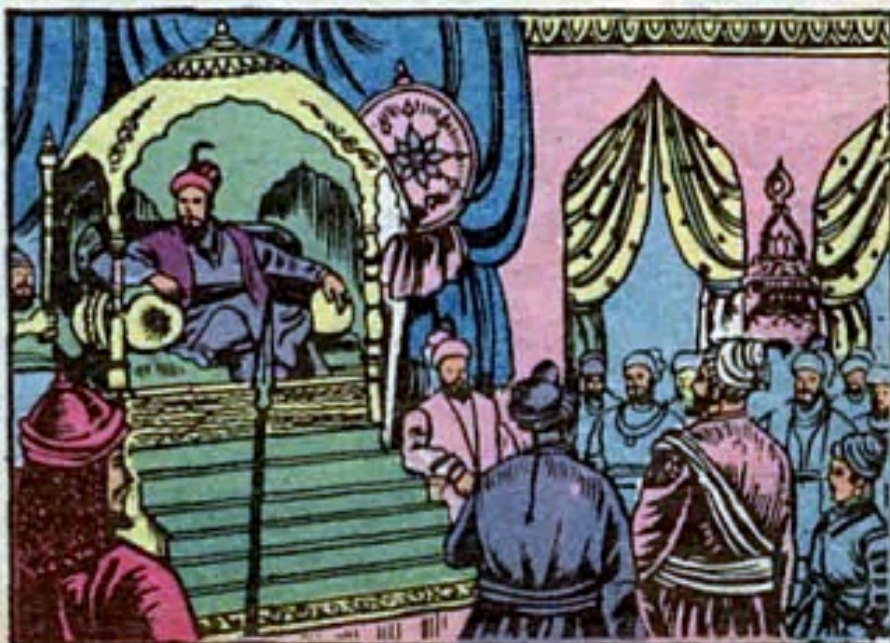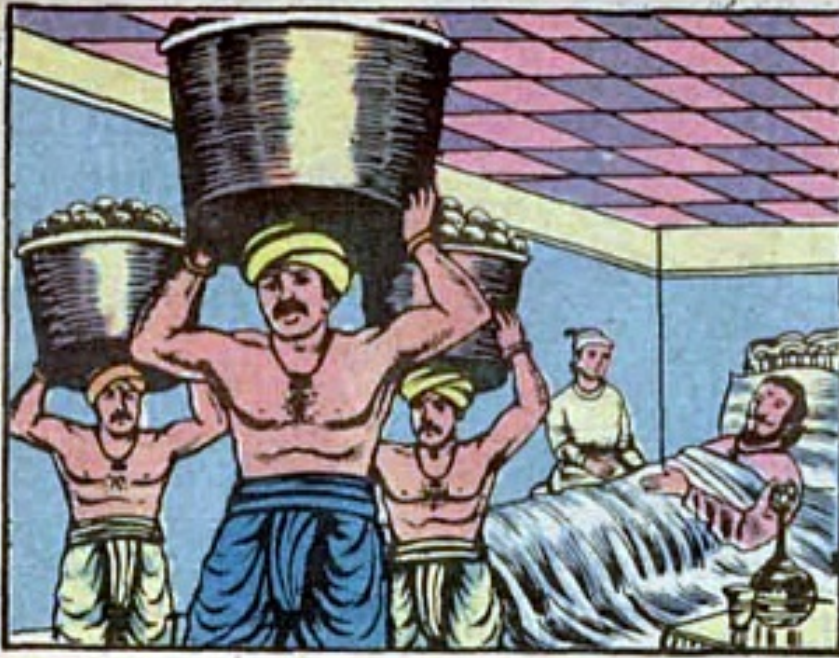
शिवाजी और उनके पुत्र आगरे के महल में बन्दी बना लिये गये। इस बात का बहुत कड़ा इन्तजाम किया गया कि वे किसी प्रकार भाग न सकें। औरंगजेब यह सोच कर बहुत खुश था कि उसका सबसे बड़ा शत्रु जाल में फँस गया है। शिवा जी ने बीमार हो जाने का बहाना बनाया और ठीक होने के लिए पुण्य करने के बहाने गरीबों के लिए मिठाइयाँ भेजने लगे। मिठाइयों की थैलियाँ दिनों दिन बढ़ती गईं।

एक दिन शिवाजी और शम्भोजी मिठाई की बोरियों में बैठ कर महल से बाहर आ गये। पहरेदारों ने रोज़ जाने वाली मिठाई की बोरियों की हर बार जाँच करने की जरूरत नहीं समझी। यह खबर औरंगज़ेब तक बहुत देर से पहुँची।

संन्यासियों के वेश में शिवाजी और उनके पुत्र आगरे से बाहर निकल गये। नगर की सीमा पर शिवाजी के अनुचर घोड़े लेकर तैयार थे। कुछ ही दिनों वे पूना पहुँच कर अपने परिवार से मिले। शिवाजी को शान्त करके उनके साथ मैत्री करने के लिए औरंगज़ेब ने उन्हें 'राजा' की उपाधि से विभूषित किया।

अनुभव

किशन एक हट्टा-कट्टा जवान था। झबरी मूँछों तथा भारी शरीर के कारण वह देखने में यमदूत जैसा लगता था। वह अपने गाँव में साग-सब्जी पैदा करके उन्हें खुद शहर ले जाकर बेच आता था।

एक दिन किशन शहर में सब्जी बेच कर और रुपये की थैली कमर में डाल कर अपने गाँव के लिए आने लगा। उस समय उसके एक मित्र ने सलाह दी- ''आजकल के दिन पहले जैसे नहीं रहे। इन पैसों को अपने कपड़ो में इस प्रकार छिपा कर रखो कि किसी की नज़र न पड़े।'' पर किशन अपनी मूँछों पर ताव देता हुआ बोला- ''किसकी हिम्मत है जो मेरे रुपयों की चोरी कर ले !'' और गाँव की ओर चल पड़ा।

रास्ते में उसे प्यास लगी। एक जगह पर कुएं के जल से प्यास बुझा कर थोड़ा आराम करने के लिए निकट के सराय में बैठ गया। उस समय एक दुबला-पतला आदमी किशन के पास आकर बोला- ''बाबूजी ! मालिश कर दूँ ? थकावट दूर हो जायेगी।''

किशन मान गया और मालिश करवाने लगा। मालिश वाले ने मालिश करते हुए उसकी गर्दन की नस ऐसा दबाया कि किशन अपना होश खो बैठा।

आधे घण्टे के बाद जैसे ही किशन होश में आया, अपने रुपयों की थैली टटोलने लगा। तभी वह मालिश वाला उसकी थैली वापस करता हुआ बोला- ''यह लीजिए महाशय ! अपनी थैली ! रुपये गिन कर देख लीजिए। मुझे नहीं मालूम आप के उस मित्र का क्या नाम है जिसने रुपये सुरक्षित रखने की सलाह दी थी। पर मुझे लोग ''सलाहकार सदाशिव'' कहते हैं। मैं जो भी सलाह देता हूँ वह प्रत्यक्ष अनुभव के साथ देता हूँ।''

इस पर किशन ने मुस्कुराते हुए इनाम में उसे एक रुपया दे दिया।

इमली की गठरी

किसी गाँव में एक व्यापारी रहता था। उसका परिवार बड़ा था, लेकिन उसका व्यापार छोटा था। उसकी आमदनी बस इतनी थी कि किसी प्रकार परिवार का खर्च चल जाता था। इसलिए वह बहुत सोच-समझ कर पैसे खर्च करता और जहाँ तक हो सके किफायत करने की कोशिश करता।

वह जब-तब शहर में जाकर एक साथ ही आवश्यक चीजें खरीद कर ले आता। लेकिन उन्हें गाड़ी पर लाद कर नहीं लाता, क्यों ऐसा करने से उसे राजपथ पर चुंगी देना पड़ता था। इसलिए वह चुंगी तथा गाड़ी के किराये से बचने के लिए उतना ही सामान खरीदता जितना वह खुद ढो सकता था। वह सामान को एक बोरे में भर जंगल के रास्ते से पैदल चला आता था।

जंगल का रास्ता बहुत दूर पड़ता था। साथ ही चोरों और खूंखार जानवरों का भी डर लगा रहता था। लोगों में यह चर्चा भी थी कि उस जंगल में भूत-पिशाच भी रहते हैं। फिर भी वह व्यापारी हिम्मत करके उस मार्ग से आया-जाया करता था।

एक बार वह व्यापारी इसी प्रकार माल खरीद कर सर पर लिए जंगल के मार्ग से चला आ रहा था। रास्ते में एक बरगद के पेड़ से एक पिशाच कूद पड़ा और उसकी ओर बढ़ते हुए बोला- "मैं तुम्हें निगल जाऊँगा।"

व्यापारी पहले तो डर गया, फिर हिम्मत बटोर कर बोला- "ओह तुम पिशाच हो? मैं तो यह समझ कर डर गया था कि तुम सूआवाले हो।"

व्यापारी की बात सुन कर पिशाच को आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि यह कैसा

(२५ वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी)

आदमी है जो पिशाच से नहीं डरता और सूआवाले से डरता है । कहीं वह मुझसे भी खतरनाक प्राणी तो नहीं है !

इसलिए पिशाच ने व्यापारी से पूछा- "वह सुआवाला कौन है ? मैंने तो आज तक उसका नाम नहीं सुना है ! वह कहाँ रहता है और क्या वह मुझसे भी भयंकर प्राणी है ?

व्यापारी ने उत्तर देते हुए कहा- "सूआवाला साधारणतः इस जंगल में तो नहीं रहता, फिर भी यदि मिल जाये तो उसे भूल कर भी नहीं छोड़ना चाहिए। तुम तो निरे पिशाच हो और हम मनुष्यों को अमानवीय ढंग से निगल जाते हो। परन्तु सूआवाला तो बड़ी क्रूरता से सूआ चुभो-चुभो कर मारता है ।"

इस बात से पिशाच को क्रोध आया कि उसे देख कर व्यापारी डरा नहीं, उलटा किसी सूएवाले की चर्चा कर उसे ही डराने की कोशिश कर रहा है। इसलिए उसने गरज कर कहा- "मुझे उस सूआवाले को जल्दी दिखाओ ।"

"वह शहर में कहीं होगा ! यदि हमें देख ले हमें और तुम्हें भी मार डालेगा। इसलिए यदि तुम सूआवाले को देखना ही चाहते हो तो मैं तुम्हें इस बोरे में छिपा लूंगा। तुम बोरे के छेदों से देखना, मगर कुछ बोलना नहीं ।" व्यापारी ने उसे सावधान करते हुए कहा ।

इसके बाद व्यापारी ने अपने बोरे की सारी चीजें निकाल कर उसके अन्दर पिशाच को

बिठा दिया और फिर बोरे का मुँह बन्द कर दिया। उसे कन्धे पर डाल कर वह गाँव की ओर चल पड़ा। वह चुपचाप राजपथ से होकर चुंगी घर को पार करके चला जा रहा था। तभी चुंगी कर्मचारियों ने उसे डपटते हुए कहा- "अबे रुक जाओ और दिखाओ उस बोरे के अन्दर के क्या है ?"

व्यापारी ने कन्धे पर से बोरा उतारते हुए कहा- "अजी, इसके अन्दर इमली है, इमली !"

चुंगीघर का कर्मचारी बोरे को तौलवा कर सूए से उसे चार-पाँच जगह चुभो कर बोला- "इसका वजन चार मन है। चार चवन्नी यानी एक रुपया इसका चुंगी चुकाना पड़ेगा।"

व्यापारी ने चुंगी कर चुका दिया और किसी और मार्ग से होता हुआ अपने सामान के पास फिर पहुँच गया। उसने पिशाच को बोरी से निकालते हुए कहा- "तुमने सूआवाले का प्रताप देख लिया न ? मैंने उसे एक रुपया दिया इसीलिए तुम्हारे प्राण बच गये, वरना सूआ चुभो-चुभो कर तुम्हें जान से ही मार डालता।"

"उसने सचमुच मुझे सूए से मार ही डाला। तुमने झूठ बोल कर मुझे बचा लिया। इसके बदले तुम मुझसे किस प्रकार का उपकार चाहते हो ?" पिशाच ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा।

व्यापारी ने लाभ का अच्छा का अच्छा अवसर देख कर पिशाच से कहा- "मेरा परिवार बहुत बड़ा है लेकिन मेरी आमदनी बहुत कम है। यदि तुम कुछ कर सको तो कुछ धन की सहायता कर दो।"

"यह कौन सी बड़ी बात है। इस पेड़ के नीचे बहुत सारा धन गड़ा है। खोद कर ले लो।" इतना कह कर पिशाच उड़ कर बरगद के पेड़ पर जा बैठा।

व्यापारी ने उस स्थान को खोद कर धन से अपना बोरा भर लिया और जंगल के रास्ते अपने गाँव आ गया। अब वह बड़े आराम से अपने दिन बिताने लगा।

परदा हट गया

आदित्य पच्चीस वर्ष का एक साहसी युवक था। वह प्रति दिन रात का भोजन करने के बाद गाँव के बाहर तालाब तक टहलने जाया करता था। रास्ते में उसे श्मशान घाट से होकर जाना पड़ता था, फिर भी उसे इसकी परवाह नहीं थी, क्यों कि उसे भूत-प्रेत से डर नहीं लगता था।

एक दिन रात को रोज़ की तरह खाने के बाद टहल कर लौट रहा था। उस समय श्मशान के पास आदित्य ने दो व्यक्तियों को जोर-जोर से चिल्लाते और लड़ते-झगड़ते देखा।

आदित्य उनके कुछ करीब जाकर डपटता हुआ बोला- "तुम लोग इतनी रात गये यहाँ क्यों लड़ाई कर रहे हो ?"

इस पर लड़नेवालों में से एक ने कहा- "यह कोई मनुष्य मालूम होता है। इतनी रात गये अन्धेरे में इधर आ गया है तो निश्चय ही कोई साहसी व्यक्ति होगा। चलो, इसी के पास चलें, शायद यह हमारे झगड़े का फैसला कर दे।"

आदित्य उनके और करीब आया तो केवल दो काली आकृतियाँ दिखाई दीं। अन्धेरे में दो काली छाया के समान वे लग रहे थे। उसे शक हुआ कि शायद ये भूत हों। साहस बटोर कर उसने फिर पूछा- "क्या तुम्हीं लोग अभी झगड़ा कर रहे थे ?"

"हाँ-हाँ, हम ही लोग झगड़ रहे थे। क्या हम लोगों को देख कर डर नहीं लगता ? जानते नहीं, हमलोग इनसान नहीं ? भूत हैं-भूत।" एक ने कहा।

आदित्य को भीतर ही भीतर डर लग रहा था। लेकिन ऊपर से हिम्मत करके बोला- "यह बात तो तुम लोगों के कहे बगैर भी मालूम हो रही है। मैं कोई डरपोक नहीं हूँ जो तुम लोगों से डर जाऊँ। मैंने बचपन में वीथि-नाटकों में तुम जैसे लोगों को देखा है। और अब उस

तुम्हें उस कन्या को देख कर यह फैसला करना है कि हम दोनों में से किसकी राय सही है ।"

आदित्य मन में तो यह सोचता रहा कि "मैं नाहक इन भूतों के झगड़ों में फँस गया", पर ऊपर से उनके झगड़े के फैसले की स्वीकृति में सिर हिला दिया ।

उसके बाद वे दोनों भूत आदित्य को उस मकान की छत पर ले गये जहाँ वह सुन्दर कन्या सो रही थी । उस छत पर एक वृक्ष की शाखा झुकी हुई थी । वे दोनों भूत उस शाखा की सहायता से छत पर उतर गये । आदित्य भी उसी प्रकार छत पर चढ़ गया ।

समय श्मशान के पास देख रहा हूँ ।"

"तुम्हारी निडरता की हम तारीफ करते हैं । तुम्हें हमारे झगड़े का फैसला करना होगा ।" दूसरे भूत ने कहा ।

"तुम दोनों में किस बात का झगड़ा है ?" आदित्य ने पूछा ।

पहले भूत ने झगड़े का मुद्दा समझाते हुए कहा- "यहाँ से निकट ही एक मकान की छत पर के कमरे में अप्सरा जैसी सुन्दर कन्या सो रही है । हमदोनों में उस कन्या की देह-छाया के रंग को लेकर विवाद हो गया है । मैं कहता हूँ उसकी देह-छाया खरे सोने के रंग की है, परन्तु मेरा साथी-भूत कहता है कि गुलाबी रंग का है ।

दुधिया चाँदनी में छत पर सो रही उस कन्या का रूप रंग देख कर आदित्य ठगा-सा रह गया। वैसी सुन्दरता उसने आज तक नहीं देखी थी । लगता था चाँदनी से ही उसका शरीर बना था । उसने मन ही मन निश्चय किया कि मैं यदि विवाह करूँगा तो इसी कन्या के साथ, वरना कुंवारा रहूँगा ।

आदित्य उस कन्या की ओर एक टक देख रहा था । इधर वे दोनों भूत पेड़ की शाखा पकड़ कर छत से नीचे उतर रहे थे । तभी उनके कूदने की आहट से वह कन्या जग पड़ी और अपने पलंग के पास किसी अनजान पुरुष को देख "चोर-चोर" कह कर चीखने लगी ।

आदित्य ने मुस्कुरा कर कहा- "डरो मत। मैं चोर नहीं हूँ और न भूत हूँ।"

"तब इस आधी रात को यहाँ किसलिए आये हो ?" कन्या ने क्रोध दिखाते हुए कहा।

आदित्य ने वहाँ आने का कारण बताते हुए कहा- "भूतों ने जो भी तुम्हारे बारे में कहा है, वह सोलहो आने सच है। तुम्हारा सौन्दर्य अनुपम है। मैं कोई 'ऐरा-गैरा नत्थू खैरा' नहीं हूँ। अच्छे पद पर काम करता हूँ। तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता हूँ। सवेरा होते ही तुम्हारे माता-पिता से इस सम्बन्ध में बात करूँगा।"

आदित्य की बातें सुन कर वह कन्याा क्रोध से लाल-पीली होती हुई बोली- "मेरे साथ विवाह करने का साहस तुमने कैसे किया ? मेरी सुन्दरता देखने के बाद भी तुमने यह सोचने की भी हिम्मत कैसे की ? क्या मैं तुम्हारे ही जैसे काले-कलूटे से विवाह के लायक हूँ ? क्या तुमने आइने में अपनी बन्दर जैसी शक्ल देखी है ?"

वह इस प्रकार आदित्य को खरी खोटी सुनाती हुई फिर "चोर-चोर" चिल्ला कर रक्षा के लिए अपने भाई को पुकारने लगी।

आदित्य उस सुन्दर कन्या के अपमान भरे शब्द सुन कर तिलमिला उठा। अपने रूप के बारे में उसके विचार सुन कर वह आत्म ग्लानि और शर्म से गड़ गया। वहाँ अब एक पल ठहरना भी उसे भारी लगने लगा। वह वहाँ से भागना ही चाहता था कि हाथ में लाठी लिए एक पहलवान आ पहुँचा।

वह आदित्य को देख कर गरज उठा- "अरे चोर के बच्चे ! तुझे अभी छत से नीचे फेंकता हूँ। ठहरो।"

आदित्य डर से थर-थर काँपता हुआ बोला- "मैं चोर नहीं हूँ और न बदमाश हूँ...।" आदित्य अभी और कुछ कहना ही चाहता था कि वह कन्या खिलखिला कर हसँती हुई बोली- "इतना बदसूरत और डरपोक आदमी आज तक मैंने नहीं देखा।"

तभी पहलवान ने कहा- "चलो, आज तुम

पर रहम करके छोड़ देता हूँ और एक अंधेरी कोठरी में तुम्हें डाल देता हूँ। कल सब के सामने तुम्हारी खाल उधेड़ूँगा।"

इतना कहते हुए उसने आदित्य को खींच कर सीढ़ियों से नीचे ले जाते हुए एक अन्धेरी कोठरी में धकेल दिया तथा बाहर से दरबाजा बन्द कर दिया।

आदित्य रात भर सो न सका और उसका एक-एक पल एक भयंकर सपने की तरह गुजरा। जब सुबह होने पर उसने चिड़ियों की आवाज सुनी तो दरबाजे को पीट-पीट कर "खोलो-खोलो" चिल्लाने लगा।

थोडी देर में दरबाजा खुल गया, लेकिन दरबाजा खोलनेवाला न तो वह पहलवान था, न वह सुन्दर कन्या। दरबाजा उस रास्ते से गुजरने वाले कुछ मजदूरों ने खोल दिया था।

उन मजदूरों ने आश्चर्य से पूछा- "इस भूतहे खंडहर की अन्धेरी कोठरी में तुम कैसे आये ?

आदित्य को भी इस बात पर आश्चर्य हुआ कि रात की कन्या और उसका भाई पहलवान कहाँ गये। जो हो, उस समय तो वह अपमानित-सा अपने घर को लौट गया लेकिन उन भूतों से अपने अपमान का बदला लेने का निर्णय कर लिया। रात होते ही हाथ में एक मजबूत लाठी लेकर वह उसी स्थान पर फिर गया जहाँ रात में भूत दिखाई दिये थे।

दोनों भूत वहाँ पहले से ही बैठे हुए थे। आदित्य को देख कर वे हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। फिर एक बोल- "हम जानते थे, तुम जरूर आओगे। तुम मानुख लोग जो लाठी और धनुष-बाण लेकर चलते हो, वे सब हमारे लिए तिनके के समान हैं।"

"यह सब तो बाद में देखेंगे, पहले यह बताओ कि पिछली रात को तुमलोगों ने दूसरे भूतों से मिल कर यह नाटक क्यों रचाया ? जानते हो वहाँ मेरा कैसा अपमान हुआ ?" अपने कन्धे पर लाठी रखते हुए आदित्य ने पूछा।

"वह साधारण नाटक नहीं, वीथि नाटक था

तुम्हें सबक सिखाने के लिए हमने यह नाटक रचाया था। हम सबने मिल कर यह सब इसीलिए किया था कि तुम्हारा अपमान हो।

क्या तुमने अंजनी का नाम सुना है ? हमलोग उसी लड़की के गाँव से खास काम से आये हैं।" भूतों ने कहा।

"अंजनी। हाँ मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। वह हमारे रिश्ते में पड़ती है।" थोड़ा घबराते हुए आदित्य ने कहा।

"गनीमत है, तुम्हें उस लड़की का नाम तो याद है। तो यह भी याद होगा कि कभी उसके साथ तुम्हारी शादी भी पक्की हुई थी और तुम खुशी से उसके साथ शादी के लिए राजी भी थे। फिर नौकरी मिलने पर उस बस्ती में आ गये। यहाँ कुछ सुन्दर कन्याओं को देख कर तुमने अंजनी से विवाह करने के लिए मना कर दिया, क्योंकि अब वह तुम्हारे लिए कुरूप हो गयी। यह सब सच है न ?" भूतों ने इस पर व्यंग्य कसते हुए कहा।

आदित्य कुछ उत्तर न दे सका। ये सारी बातें सच्ची थीं। उसने चुपचाप सर झुका लिया।

एक भूत अट्टहास करता हुआ फिर बोला- "रात को उस सुन्दर कन्या से विवाह करने चले थे। तुम कितने सुन्दर हो, यह मालूम हो गया न ? एक हफ्ता पहले जब अंजनी के पिता तुम्हारे पास शादी के लिए गिड़गिड़ाने आये थे, तब

तुमने भी तो अंजनी के बारे में यही कहा था। उसने भी तो ऐसा ही अपमानित अनुभव किया होगा।"

ये बातें सुन कर आदित्य के मन के कई भ्रम मिट गये। अपना दुख देख कर उसने समझा कि अंजनी को भी वैसा ही कष्ट हुआ होगा। उसने यह भी अनुभंव किया कि खूबसूरत चेहरे के साथ खूबसूरत दिल भी हो, यह जरूरी नहीं है। इसी तरह देखने में सुन्दर नहीं लगनेवाली लड़की का दिल बहुत सुन्दर हो सकता है। किसी सुन्दरी के हृदय में राक्षसी का निवास हो सकता है, और किसी कुरूप कन्या के हृदय में देवी वास कर सकती है। वह यह याद करके

फिर एक बार काँप उठा कि रात में देवी जैसी लगने वाली सुन्दर कन्या कैसे राक्षसी की तरह कठोर और निर्दयी बन रही थी !

इस प्रकार आदित्य के मन में कुछ देर तक विचारों का उतार-चढ़ाव होता रहा। फिर उसने भूतों से कहा- "तुम लोगों ने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैं अब समझ गया हूँ कि चेहरा नहीं, मनुष्य का हृदय सुन्दर होना चाहिए। कल सवेरे ही मैं अंजनी के गाँव जाकर उसके साथ विवाह पक्का कर आऊँगा।"

"वाह ! तुमने लाख टके की बात कही है। लगे हाथ कोई शुभ घड़ी निकाल कर विवाह भी कर लो—चट मंगनी पट विवाह। क्या मालूम कोई और भूत आकर सारा गुड़ गोबर कर दे।" इतना कह कर वे दोनों भूत अंधेरे में ओझल हो गये।

दूसरे दिन सवेरे ही आदित्य अपने गाँव चला गया और अंजनी के पिता से बातचीत कर अंजनी के साथ शादी पक्की कर ली। इस बात से अंजनी तथा उसके परिवार वालों को बहुत खुशी हुई।

दस दिनों के बाद आदित्य और अंजनी का विवाह भी सम्पन्न हो गया। इस खुशी के अवसर पर अतिथियों के मनोरंजन के लिए अंजनी के पिता ने एक वीधि नाटक का आयोजन कराया।

नाटक के आरम्भ होते ही मंच पर तीन पुरुषों के अतिरिक्त एक सुन्दर कन्या आई। इन्हें देख कर आदित्य चौंक पड़ा और अपने पास बैठे ससुर से बोला- "ये लोग मनुष्य नहीं, भूत हैं।" यह कह कर उसने कुछ दिन पूर्व घटी भूतों की घटना सुना दी।

अंजनी का पिता इस पर मुस्कुराता हुआ बोला- "हाँ हाँ आदित्य ! तुम ठीक कहते हो। ये वीथि नाटक खेलनेवाले भूत हैं। मैंने ही तुम्हारे भ्रम का परदा हटाने के लिए इनसे वह नाटक करवाया था।"

लेकिन आदित्य को यह जान कर दुख नहीं हुआ बल्कि वह भी खुशी के मारे खिलखिला कर हँस पड़ा।

इकरारनामा

धरणीधर गुरुकुल में विद्याध्ययन समाप्त कर अपने गाँव लौट आया। उसके गाँव में सुन्दरदत्त नाम का एक व्यापारी था। उसने धरणीधर को समझदार और ईमानदार समझ कर अपने यहाँ मुंशी के पद पर रख लिया। धरणीधर सुन्दरदत्त के व्यापार का हिसाब-किताब रखने लगा।

तीन महीनों में ही धरणीधर अपने काम में पूरी तरह पारंगत हो गया।

उसी गाँव में अशोक मिश्र नाम का एक दूसरा व्यापारी था। इन दोनों व्यापारियों में स्पर्द्धा होती रहती थी। अशोक मिश्र को यह मालूम हुआ कि धरणीधर न केवल हिसाब-किताब में प्रवीण है, बल्कि ईमानदार और विश्वास पात्र भी है। उसने तब अपने अनुचर के द्वारा सन्देश भेज कर धरणीधर को यह लालच दिया कि उसके यहाँ उसी पद के लिए सौ सिक्के अधिक वेतन दिया जायेगा।

इस पर धरणीधर सुन्दरदत्त को छोड़ कर अशोक मिश्र के कार्यालय में काम करने लगा।

उस गाँव का जमीन्दार था— माधव राय। उसकी जागीर का हिसाब-किताब रखने के लिए एक कर्मचारी की आवश्यकता थी। उसने धरणीधर को बुलवा कर पूछा- "सुनो! अशोक मिश्र तुम्हें कितना वेतन देते हैं?"

"दो सौ सिक्के।" धरणीधर ने उत्तर दिया।

"बस! सिर्फ दो सौ सिक्के?" जमीन्दार ने आश्चर्य के साथ कहा। "मैं तुम्हें चार सौ दूगाँ।" जमीन्दार ने लालच देते हुए कहा।

धरणीधर दुगुने वेतन पर रीझ गया और दूसरे दिन से जमीन्दार के यहाँ काम करने लग गया। दो-तीन महीने गुजर गये। एक दिन अपने बचपन के दोस्त धर्मदास से अचानक धरणीधर की मुलाकात हो गई। उसने कहा- "मित्र! मैं आयात-निर्यात का व्यापार कर रहा हूँ। तुम भी क्यों नहीं कुछ पूंजी लगा कर मेरे

कमलनाथ

पास व्यापार करते हो ? उसमें बहुत लाभ होगा ।''

''मैं अपना व्यापार नहीं करना चाहता न किसी के साथ मिल कर ही व्यापार करना चाहता । मेरे पास दरअसल पूँजी भी नहीं है ।'' धरणीधर ने उत्तर दिया ।

''तब तुम एक काम करो । मेरे व्यापार का हिसाब-किताब देखते हुए व्यापार में मेरी सहायता करो । तुम्हें अभी जितना वेतना मिलता है, उससे दुगुना दूगाँ ।'' उसके दोस्त ने कहा ।

इस तरह धरणीधर जमीन्दार के यहाँ से नौकरी छोड़ कर धर्मदास के यहाँ आ गया । पर अभी एक महीना भी पूरा नहीं हो पाया, था कि राज अधिकारियों ने धर्मदास के व्यापार को तस्करी घोषित करके उसे कारागार में डाल दिया ।

धरणीधर के पास कोई काम न रहा । उसे किसी ने भी नौकरी के लिए नहीं बुलाया । उसने नौकरी की बहुत तलाश की पर कहीं न मिली ।

आखिर तंग आकर पड़ोसी गाँव में रहने वाले वह अपने मामा गणपत राय के यहाँ गया और उसने उससे सारा हाल बताया । गणपत राय एक छोटा-सा जागीरदार था ।

गणपतराय बोला- ''तुम्हारा मन चंचल है । जो तुम्हें थोड़े-से सिक्के अधिक दे देता है उसके पास दौड़ जाते हो ! ऐसे व्यक्ति को कौन नौकरी देगा ?''

''मामा जी ! मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में ऐसे प्रलोभन में कभी नहीं पड़ूँगा । मैं इस बात इकरारनामा लिख कर दूँगा कि मैं काम छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगा ।'' धरणीधर ने दीनतापूर्वक चेहरा बना कर कहा ।

दूसरे दिन मणपतराय धरणीधर को साथ लेकर जमीन्दार के यहाँ पहुँचा और सारा वृतांत सुना कर बोला- ''महाशय ! धरणीधर स्थायी रुप से एक ही जगह पर काम करने का निश्चय कर चुका है । आप चाहें तो इस बात का इससे इकरारनामा ले लीजिए ।''

''मुझे ऐसे किसी पत्र की आवश्यकता नहीं है । तुम्हारे भांजे का पिछला अनुभव ही हमारे लिए एक इकरारनामा है ।'' यों कहते हुए जमीन्दार ने धरणीधर को फिर से अपने यहाँ नौकरी दे दी ।

विष्णु पुराण

लक्ष्मी वेदवती के रुप में जन्म लेकर जब तपस्या कर रही थी, तब रावण ने उनका जूड़ा पकड़ लिया। रावण के स्पर्श से अपवित्र होने के कारण उसने अपने शरीर को योग-अग्नि में भस्म कर लिया और लंका में नया जन्म ग्रहण किया।

लंका में महल के निकट ही एक सुन्दर सरोवर था। रावण प्रतिदिन की तरह उस सरोवर में स्नान करके शिव जी की पूजा के लिए कमल के फूल तोड़ रहा था। तभी उसने प्रकाश विखेरता हुआ एक बड़ा-सा कमल का फूल देखा। रावण जब उस कमल के पास पहुँचा तो वहाँ उसने उसकी पंखुड़ियों में, सुनहले प्रकाश में लिपटी एक नवजात बालिका देखी।

तभी उसे यह आकाश वाणी सुनाई पड़ी-

"हे रावण। यह बालिका तुम्हारे जीवन और तुम्हारी लंका के लिए धूमकेतु बन कर आई है।"

रावण ने तुरत राक्षसों को इस शिशु का वध करने का आदेश दे दिया। किन्तु बहुत प्रयास करके भी राक्षस इस शिशु को मार न सके। जिन तलवारों से वे इसकी हत्या करना चाहते थे, वे तलवारें गायब हो गईं।

जब राक्षसों ने शिशु को आग में जलाना चाहा तो अग्नि शान्त हो गई और जब उसे चट्टान पर पटक कर मारना चाहा तो पत्थर फूल बन गये। हिंसक पशुओं के सामने जब उसे डाला गया तो वे भी भाग गये। तब राक्षसों ने तंग आकर पाँच धातुओं से बने एक बक्स में उस कन्या को बन्द कर समुद्र में फेंक दिया।

वह पेटी समुद्र को पार कर पृथ्वी को चीरती

हुई बहुत दूर चली गई ।

मिथिला के राजा जनक बड़े ज्ञानी और राजर्षि थे। वे यज्ञ करने के लिए ज़मीन को हल द्वारा समतल करवा रहे थे। उस समय हल के फाल से किसी चीज़ के टकराने की आवाज़ आई । वहाँ पर खोदने पर एक पेटी मिली, जिसमें एक सुन्दर कन्या को देख कर राजा जनक ने धरती माता का प्रसाद समझ उसे गोद में ले लिया ।

हल की नोंक को सीता कहते हैं । हल चलाते समय मिलने के कारण सीता के नाम से, जनक की बेटी होने के कारण जानकी तथा ज़मीन के अन्दर से उत्पन्न होने के कारण भूजाता के नाम से वह अत्यन्त लाड़-प्यार में पलने लगी ।

एक दिन सीता अपनी सहेलियों के साथ गेंद खेल रही थी । खेलते-खेलते गेंद शिव धनुष के नीचे चली गई । सीता गेंद को खोजते-खोजते शिव धनुष के पास आकर तथा धनुष को बायें हाथ से उठा कर गेंद वापस ले आई । उसके बाद उस धनुष को उठा लाकर खिलौने की तरह उससे खेलने लगी। उस भारी शिव धनुष को खिलौने की तरह उठाते देख कर राजा जनक को बड़ा आश्चर्य हुआ ।

राजा जनक के पूर्वज शिव जी से प्राप्त उस धनुष की, परम्परा से, पूजा करते आ रहे थे। त्रिपुरासुर के संहार के समय शिव जी ने उसी धनुष का प्रयोग किया था। उस शिव धनु को तीन सौ शक्ति शाली व्यक्ति एक साथ मिल कर ही उठा सकते थे ।

इसलिए राजा जनक ने सोचा कि ऐसे भारी धनुष को इस प्रकार उठा लेने वाली कोई साधारण मानवी नहीं हो सकती । अतः इस धनुष पर बाण चढ़ाने वाला पुरुष ही इसका योग्य वर हो सकता है। सीता के स्वयंवर के समय राजा जनक ने इसीलिए ऐसी घोषणा करवाई ।

सीता बड़ी हो गई और इसके विवाह के लिए स्वयंवर की घोषणा कर दी गई ।

इधर अपने यज्ञ की रक्षा के लिए विश्वामित्र

ने दशरथ से राम-लक्ष्मण को भेजने के लिए अनुरोध किया। किन्तु दशरथ बोले- "महर्षि! ये छोटे-छोटे कोमल बच्चे राक्षसों से यज्ञ की रक्षा नहीं कर पायेंगे। इन्होंने तो अभी धनुर्विद्या का अभ्यास भी नहीं किया है।"

इस पर दशरथ को आश्वासन देते हुए विश्वामित्र बोले- "इसीलिए मैं इन्हें लेने आया हूँ। राजकुमारों को जिन युद्ध विद्याओं की आवश्यकता होती है, उन सब में मैं इन्हें निपुण बना दूँगा। आप चिन्ता न करें राजन!"

वसिष्ठ जी ने मुस्कुराते हुए विश्वामित्र की प्रशंसा की और कहा- "विश्वामित्र जो भी कह रहे हैं, वह जन-कल्याण के हित में है।"

राजा दशरथ ने वसिष्ठ के आदेश पर बड़े दुख के साथ राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ विदा किया। राम-लक्ष्मण मुनिवेश में धनुष-बाण लेकर विश्वामित्र के पीछे-पीछे चल पड़े।

रास्ते में धनुर्विद्या की गूढ़ बातों पर प्रकाश डालते हुए विश्वामित्र राम-लक्ष्मण के साथ सिद्धाश्रम पहुँचे। विश्वामित्र की देखरेख में राम-लक्ष्मण धनुर्विद्या की विभिन्न कलाओं में पारंगत हो गये।

जब विश्वामित्र यज्ञ की तैयारी कर रहे थे कि ताड़का नाम की राक्षसी ने इनके आश्रम पर हमला कर दिया। विश्वामित्र ने राम को ताड़का-वध का आदेश दिया। गुरु की आज्ञा पाकर राम ने ताड़का पर बाणों की वर्षा शुरु कर दी। वह भयंकर गर्जन करती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ी। कुछ देर छटपटा कर उसने दम तोड़ दिया।

विश्वमित्र ने रामचंद्र के बाण-कौशल की प्रशंसा की।

यज्ञ प्रारम्भ हो गया। विश्वामित्र ने अस्त्र-शस्त्र विद्या सम्बन्धी कुछ उपदेश देकर राम लक्ष्मण को यज्ञ-रक्षा का आदेश दिया। यज्ञ प्रारम्भ होते ही मारीच और सुबाहु यज्ञशाला पर टूट पड़े। राम ने सुबाहु को अपने बाणों से मार गिराया। मारीच घायल होकर भाग गया और समुद्र में कूद पड़ा और बहता-बहता लंका जा पहुँचा।

यज्ञ बिना किसी बाधा के पूरा हो गया। राम के हविष्य से यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। अन्तिम आहुति पड़ते ही यज्ञकुण्ड की ज्वाला से एक दिव्य बाण प्रकट हुआ। विश्वामित्र ने राम को वह बाण भेंट करते हुए कहा- "यह दिव्यास्त्र तुम्हारे लिए है राम ! यह तुम्हारे ही नाम से जगत में विख्यात होगा। यह तुम्हारे शत्रु का सिर काट कर पुनः तुम्हारे पास वापस आ जायेगा।"

राम ने गुरु के आशीर्वाद के समान पहले उस बाण को अपनी आँखों से लगाया, फिर अपने तरकश में रख कर गुरु के चरण-स्पर्श किये।

विश्वामित्र ने राम को आशीर्वाद देते हुए कहा- "हे राम ! मैंने अपनी सारी अस्त्र विद्या तुम्हें सिखा दी है। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे तुम्हारा गुरु कहलाने का अवसर मिला। मैं अपनी इस प्रसन्नता को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।"

राम ने विनय भाव से कहा- "मैं धन्य हूँ कि आपने मुझे अपनी कृपा का पात्र समझा और अपना शिष्य बना कर अपना ज्ञान प्रदान किया।"

सिद्धाश्रम में रहते और गुरु की सेवा करते हुए राम और लक्ष्मण युवा हो चले थे। इन दोनों की सुन्दरता और कान्ति आश्रम की शोभा में चार चाँद लगा रही थी। राम के कमल जैसे विशाल नेत्रों से लगता था जैसे सर्वत्र शान्ति की चंद्रिका छिटक रही हो।

कुछ दिनों के बाद विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को साथ लेकर मिथिला की ओर चल पड़े। रास्ते में, गौतम मुनि के आश्रम के निकट राम के चरण-स्पर्श से एक शिला नारी बन गई। यह गौतम की पत्नी अहल्या थी जो शापवश शिला बन गई थी। अहल्या ने अपने असली रुप में आते ही राम का चरण-स्पर्श किया।

उसी समय गौतम मुनि भी अपनी लम्बी तपस्या समाप्त कर वहाँ पहुँचे और भक्ति पूर्वक प्रणाम करते हुए राम से बोले- "तुम्हारे चरणों के पावन-स्पर्श से मेरी पत्नी शाप से मुक्त हो गई। निस्सन्देह तुम परम प्रभु के अवतार पावन राम हो।"

लेकिन राम ने विनय तथा संकोच भाव से गौतम मुनि की ओर इस प्रकार देखा मानों कह रहे हों कि इसमें मेरा क्या बड़प्पन है। अवधि खत्म होने के कारण अहल्या अपने आप ही शाप से मुक्त हो गई।

गौतम मुनि ने एक टक रामचंद्र जी की आँखों में देखते हुए कहा- "हे राम! तुम अत्यन्त प्रतापी एवं परम शक्ति शाली हो।" विश्वामित्र ने भी सहमति में अपना सिर हिलाया।

इसके बाद गौतम मुनि ने अपने आश्रम में विश्वामित्र तथा राम-लक्ष्मण का अतिथि-सत्कार किया। भोजन के बाद विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को लेकर आगे चल पड़े।

राजा जनक ने सीता के स्वयंवर में भाग लेने के लिए सभी ऋषि-मुनियों को आमंत्रित किया था। इस काम को गौतम मुनि के पुत्र शतानन्द कर रहे थे। शतानन्द विश्वामित्र को आमंत्रित करने के लिए सिद्धाश्रम की ओर जा ही रहे थे कि मार्ग में उनसे भेंट हो गई।

विश्वामित्र को देख कर शतानन्द झट पालकी से नीचे उतर आये और विश्वामित्र के चरण स्पर्श कर राजा जनक का निमंत्रण उन्हें निवेदित किया। विश्वामित्र से अपनी माता अहल्या की मुक्ति का समाचार सुन कर शतानन्द बहुत प्रसन्न हुआ तथा राम के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर अनेक प्रकार से उनका स्तुति-गान किया। फिर वे अपने माता-पिता के आश्रम की ओर चल पड़े।

विश्वामित्र और राम लक्ष्मण कुछ दिनों के बाद मिथिला पहुँचे।

उस समय सीता और उर्मिला उद्यान में विहार कर रही थीं। उसी उद्यान से होकर राम और लक्ष्मण जा रहे थे। सीता और रामचंद्र दोनों की नजरें एक दूसरे पर पड़ीं। लक्ष्मण और उर्मिला ने भी एक दूसरे को देखा।

जब स्वयंवर शुरु हुआ, तो सभी राजाओं ने एक-एक करके अपनी शक्ति की आजमाइश की। किन्तु कोई वीर धनुष को हिला न सका, उसे उठा कर उस पर बाण चढ़ाना तो दूर रहा। अन्त में सभी राजाओं ने मिल कर उसे उठाना चाहा, फिर भी वह टस से मस न हुआ।

यह देखकर राजा जनक बहुत चिन्तित हुए। उन्होंने दुख और रोष में यह घोषणा की- "यदि मुझे यह मालूम होता कि पृथ्वी वीरों से खाली हो गई है तो मैं सीता के विवाह के लिए ऐसी प्रतिज्ञा ही नहीं करता ।"

राजा जनक का यह वचन सुन कर सभी राजा बौखला उठे । लक्ष्मण से भी नहीं रहा गया । उसने जनक से कहा कि ऐसा कह कर उन्होंने राम का अपमान किया है ।

तब राजा के अनुरोध पर तथा अपनें गुरु विश्वामित्र का आदेश पाकर विनम्रता की मूर्ति, शान्त, धीर राम धीरे-धीरे धनुष के पास गये और उन्होंने भक्ति पूर्वक उसे प्रणाम किया । फिर उन्होंने धनुष को इस प्रकार सरलता से उठाया जैसे हाथी गन्ने को उठा लेता है ।

राम ने जैसे ही धनुष की डोरी खींच कर उस पर बाण चढ़ाना चाहा कि एक भयंकर ध्वनि के साथ धनुष टूट गया ।

जो राजा धनुष नहीं उठा पाये थे, उन्हें ग्लानि और क्रोध दोनों हुआ । राजा जनक इस बात से प्रसन्न थे कि राम जैसा वीर और मोहक रुप वाला सीता को वर मिलेगा, लेकिन धनुष के टूट जाने से वे भयभीत भी थे ।

सीता राम को धनुष तोड़ते देख कर मन ही मन गद्गद् हो रही थी ।

धनुष टूटने की जो भयंकर ध्वनि हुई, वह चारों दिशाओं में फैल गई । दक्षिण महा सागर में महेंद्र पर्वत पर तप करने वाले परशुराम का ध्यान इससे टूट गया ।

परशुराम को विष्णु के प्रतिरुप गोलोक वासी श्रीकृष्ण की बातों का स्मरण हो आया । विष्णु ने राम के रुप में अवतार ले लिया था और परशुराम के अवतार की अवधि समाप्त हो चुकी थी । इसलिए अब परशुराम श्रीकृष्ण से प्राप्त धनुष और विष्णु का अंश श्रीरामचंद्र जी को सौंपने के लिए चल पड़े ।

इधर जनकपुर में धनुष भंग होते ही सीता ने रामचंद्र के गले में वरमाला डाल दी और संकोच करती हुई जल्दी-जल्दी अपने पिता के पास पहुँच गई ।

राजा जनक ने विवाह की रस्म पूरी करने के

लिए राजा दशरथ को बुलवा भेजा । राजा दशरथ यह समाचार पाकर फूले न समाये ।

बड़ी धूम धाम से सीता और राम का विवाह सम्पन्न हुआ । एक ही मण्डप में राम के अन्य तीनों भाइयों का भी विवाह हुआ । लक्ष्मण का उर्मिला के साथ, भरत का मांडवी के साथ तथा शत्रुघ्न का शतरूपा के साथ विवाह हुआ ।

विवाह वेदी पर जब सीता और राम फेरे लगा रहे थे तब सीता की अंजलि के मोती ऐसे चमक रहे थे मानो खिले हुए कमल के फूल में पराग झाँक रहे हों ।

बड़े हर्ष और उल्लास के साथ जब विवाह का समारोह समाप्त हुआ तब राजा दशरथ अपने पुत्रों तथा वधुओं के साथ राजा जनक से विदा ली और अयोध्या के लिए चल पड़े । तभी क्रोध से पागल बने परशुराम वहाँ पहुँच गये और शिव धनुष को तोड़ने वाले अपराधी के बारे में पूछताछ करने लगे । राजा दशरथ उनके क्रोध से भय भीत होकर तुरत रथ से उतर गये और राम के अपराध के लिए क्षमा माँगते हुए प्रार्थना करने लगे कि राम के बदले मुझे जो चाहें सज़ा दे दीजिए ।

परशुराम गरजते हुए राम से बोले- "तुमने शिव धनुष तोड़ कर मेरे गुरु का अपमान किया है । लेकिन क्या तुम मेरे धनुष पर बाण चढ़ा सकते हो ?" इतना कहते हुए उन्होंने अपना धनुष राम को दिया ।

धनुष को ग्रहण करते ही विष्णु का अवतार-अंश, जो परशुराम में था, राम में लय हो गया । राम ने बड़ी आसानी से परशुराम के धनुष की डोरी खींच ली । यह देखते ही परशुराम को विश्वास हो गया कि विष्णु का दूसरा अवतार हो गया और अब उनकी अपनी भूमिका समाप्त हो गई है ।

परशुराम का क्रोध शान्त हो गया और उन्होंने राम से क्षमा माँगी । अपना धनुष राम को देकर वे उनसे विदा ले पुनः तपस्या के लिए चले गये ।

राम अपने माता-पिता और भाइयों के साथ हर्षोल्लास के साथ अयोध्या लौट आये ।

ईर्ष्या का फल

फारस देश के एक नगर में अबू तुम्माम नाम का एक सौदागर रहता था। वह ईमानदार था, लेकिन मधुर भाषी और वाक् पटु होने के कारण व्यापार में बहुत धन कमाया था।

उस नगर का राजा अबू की सम्पत्ति और लोकप्रियता को देख जलने लगा। अबू के लिए उस देश में रहना खतरे से खाली न था, क्यों कि राजा उसे किसी वक्त हानि पहुँचा सकता था। यह सोच कर अबू प्रवासी बन कर अपने पड़ोसी देश की राजधानी में चला गया। उस देश का राजा अल्यान शाह था। वह अभी युवा था लेकिन चरित्र वान था।

अल्यान शाह ने अबू के बारे में सुन रखा था। उसने उससे मिलने की इच्छा प्रकट करते हुए खबर भेजी। खबर मिलते ही अबू कीमती भेंट लेकर राजा से मिलने गया। इसके मीठे व्यवहार, विनम्रता और वाक-चातुरी से राजा बहुत प्रभावित हुआ तथा उसने अपने दरबार मे उसे हर रोज़ आने का अनुरोध किया।

अबू ने सर झुका कर निवेदन किया- "जहाँ-पनाह ! राजा के साथ हमेशा रहना अच्छा नहीं होता। इससे बहुतों के मन में ईर्ष्या पैदा हो जायेगी।

लेकिन राजा ने उसकी बातों पर विशेष ध्यान नहीं दिया। जब भी राजा के सामने कोई कठिन समस्या पैदा हो जाती तो वह अपने तीन वजीरों से सलाह लेने के अलावा अबू के साथ भी सलाह-मशवरा करता। इससे वज़ीर अबू से ईर्ष्या करने लगे।

एक दिन तीनों वजीर एक स्थान पर मिले। उनमें से एक ने कहा- "अबू ने राजा को अपने जाल में फसाँ रखा है। अब हमें क्या करना चाहिए ?"

इस पर दूसरे वजीर ने सुझाया- "उसका अन्त करने का एक उपाय है। सुना है कि टर्की की शाहजादी परी के समान सुन्दरी है। अनेक

राजाओं ने उसके साथ विवाह का प्रस्ताव लेकर अपने दूत भेजे हैं। परन्तु, सुना है, उनमें से एक भी दूत वापस नहीं आया। ऐसा लगता है कि टर्की के राजा ने उन्हें मरवा दिया है। हमारे राजा अभी कुँवारे हैं । हमलोग उस शाहजादी की खूब सूरती की ऐसी चर्चा करें कि हमारे राजा उससे विवाह करने को तड़प उठें। जब उनकी ऐसी इच्छा हो जाये तो हमलोग यह प्रस्ताव रखें कि इस काम के लिए अबू को दूत बना कर भेजे, क्यों कि उससे बढ़कर कोई दूसरा कुशल व्यक्ति नहीं मिलेगा। और इस प्रकार अन्य दूतों की तरह वह भी कभी वापस नहीं आ पायेगा।"

"अबू को सदा-सदा के लिए खत्म करने की यह बड़ी ही कारगर योजना है।" यह कह कर अन्य दोनों वजीरों ने भी अपनी सहमति प्रकट की ।

अपनी योजना के अनुसार, राजा से टर्की की शाहजादी की खूबसूरती का बखान बढ़ा-चढ़ा कर करने लगे। वे हर रोज़ राजा से उसकी चर्चा करते और राजकुमारी की तारीफ़ के पुल बाँधा करते। धीरे-धीरे राजा के मन में राजकुमारी के प्रति प्रेम पैदा होने लगा और अन्त में उससे विवाह करने की भी इच्छा पैदा हो गई ।

एक दिन राजा ने कहा- "तुम लोगों की बातें सही हैं किन्तु यह प्रस्ताव लेकर टर्की के राजा के पास किसे भेजा जाये ?"

"जहाँपनाह ! इस कार्य की सफलता वहाँ जाने वाले दूत की बुद्धिमानी और उसकी बात करने की चतुराई पर निर्भर करेगी। यानी उस दूत में नम्रता, मधुरता, वाक् चातुरी और व्यवहार कुशलता आदि गुणों का होना जरूरी है ।" एक वज़ीर ने यह सुझाव रखा ।

"ये सारी बातें सही हैं हुजूर ! और इतनी सारी योग्यताएं सिर्फ अबू में ही हैं। क्यों नहीं इस काम के लिए अबू को भेज देते ?" दूसरे वज़ीर ने सुझाते हुए कहा ।

राजा ने वजीरों की सलाह मान कर अबू को इस काम के लिए भेज दिया ।

टर्की के राजा ने अबू का यथोचित आदर-सत्कार किया और कहा- "पहले तुम जाकर मेरी पुत्री को देख आओ। उसके बाद फिर बात करेंगे ।"

राज भट अबू को राजकुमारी के महल में ले

गये। उसने राजकुमारी को एक बार देखा, फिर प्रणाम कर नज़र नीची कर कालीन पर बैठ गया।

राजकुमारी के आसन के पास कई थालों में कीमती उपहार रखे थे और उन पर रेशमी परदे पड़े थे। राजकुमारी ने परदों को हटाते हुए कहा- "यह सारी भेंट आप के लिए है।"

कुछ देर तक दोनों चुपचाप बैठे रहे। इसी बीच अबू ने न तो कुछ बात की और न राजकुमारी की ओर दुबारा देखा। कुछ देर के बाद राजकुमारी अपने आसन से उठकर अन्दर चली गई।

जब अबू राजा की राय जानने के लिए उसके पास दुबारा गया तो राजा ने पूछा- "मेरी बेटी ने तुम्हें अन्धा, बहरा और गूंगा बताया। बात क्या हैं ?"

"हुजूर! हमारे राजा ने आप के लिए यह सन्देश भेजा है कि वे आप की पुत्री के साथ विवाह की इच्छा रखते हैं और इस सम्बन्धमें आप का क्या उत्तर है। उन्होंने राजकुमारी की सुन्दरता की जाँच के लिए कोई आदेश नहीं दिया। किसी लड़की की ओर देखते रहना अच्छा व्यवहार भी तो नहीं कहलाता।" अबू ने कहा।

"लेकिन तुमने भेंट क्यों नहीं ली ?" राजा ने फिर पूछा।

अबू ने इसका उत्तर देते हुए कहा- "जब तक यह नहीं मालूम हो कि आपने हमारे राजा का प्रस्ताव स्वीकार किया है या नहीं तब तक उपहार स्वीकार करना उचित नहीं होता।"

अबू का उत्तर सुन कर राजा बहुत खुश हुआ। वह बोला- "तुम्हारे पहले जितने दूत आये, वे सब राजकुमारी को देखते ही अपने कर्त्तव्य को भूल जाते थे और उसे अपलक निहारते रहते थे। वे अपनी बुद्धिमानी बताने के लिए बेमतलब की बातें करते जिनसे उनकी मूर्खता ही ज़ाहिर होती। इतना ही नहीं, वे भेंट को देखते ही भिखारियों की तरह उस पर टूट पड़ते और भेंट की वस्तुएं अपने कपड़ों में छिपा लेते।"

थोड़ी देर रुक कर राजा ने सवाल किया- "लेकिन जानते हो इसके बदले उन्हें क्या सज़ा भुगतनी पड़ी ?" इतना कह कर राजाने उस कमरे की एक खिड़की खोल दी और खिड़की से

उपाय सोचने लगे ।

वज़ीरों ने इस बार किसी प्रकार राजा के मन में अबू के खिलाफ़ घृणा के बीज बोने की योजना बनाई । इस काम के लिए इन्होंने राजा के पैर दबाने वाले दो नौकरों को पटाया और उन्हें सारी योजना समझा दी और थैली भर सोने की अशर्फियाँ उन्हें पहले ही दे दीं ।

एक दिन, योजना के अनुसार, रात में राजा के पाँव दबाते हुए वे सेवक आपस में बातें करने लगे मानो राजा सो गये हों । राजा ने भी बात सुनने के लिए सोने का बहाना बना लिया ।

एक सेवक ने कहा- "अरे बन्धु ! क्या तूने उस डींगमार की डींगें सुनी हैं ?"

"किस डींगमार की ?" दूसरे सेवक ने पूछा ।

"अरे उसी धूर्त की जिसने राजा को अपनी चालाकी से मुट्ठी में कर रखा है— मियाँ अबू, और कौन ।" पहले सेवक ने कहा ।

"मैंने तो नहीं सुनी हैं ! भला क्या डींग मारता है ? सुनाओ तो ।" दूसरे ने पूछा ।

पहले सेवक ने बताया- "वह कहता है कि उसकी बुद्धिमानी और वाक चातुरी के कारण ही टर्की की राजकुमारी के साथ हमारे राजा का विवाह हो सका है, वरना यह सम्भव नहीं था । और वह यह भी दावा करता है कि रानी उसे बहुत चाहती हैं ।"

"क्या ऐसी बात है ? मैं पहले से ही जानता था कि यह आदमी नीच होगा । चालाक लोग हमेशा दुष्ट और नीच होते हैं । उनसे बच कर

नीचे की ओर संकेत किया । वहाँ एक विशाल कमरे में कई देशों के दूत बन्दी बने हुए थे ।

राजा ने बन्दी दूतों को दिखाने के बाद अबू से कहा- "अपने राजा से कह दो कि मुझे उसका प्रस्ताव मंजूर है । और अब राजकुमारी द्वारा दी गई भेंट अपने राजा के लिए ले जा सकते हो ।"

एक महीने के अन्दर ही टर्की की राजकुमारी के साथ अल्यान शाह का विवाह हो गया । इस शुभ अवसर की खुशी में टर्की में बन्दी बनाये गये सभी दूत मुक्त कर दिये गये ।

अबू की सफलता से राजा की निगाह में उसका आदर और बढ़ गया । इससे वजीर जल-भुन उठे और अबू से मुक्त होने के लिए

रहना चाहिए ।"

सवेरे उठते ही राजा ने अबू को कैद में डाल दिया ।

कुछ दिनों के बाद राजा के सो जाने पर वे दोनों आपस में लड़ रहे थे । एक कह रहा था- "उस रात मैं तुमसे ज़्यादा बोला था । और मेरे अधिक बोलने के कारण ही अबू को कैद में डाला गया । इसलिए थैली की तीन-चौथाई अशर्फियाँ मेरे हक की हैं । तुमने तो सिर्फ हाँ में हाँ मिलाया था ।"

दूसरा कह रहा था- "मैं न बोलता था या तेरी बात काट देता तो राजा को तेरी बात पर विश्वास न होता । इसलिए मैं तो आधा हिस्सा लूँगा, इससे कम बिल्कुल नहीं ।"

इस प्रकार लड़ते-लड़ते वे दोनों मुक्कम मुक्की पर उतर आये । इससे राजा की नींद टूट गई और उन्होंने उनकी सारी बातें सुन लीं । उन्होंने सिपाहियों से उन दोनों नौकरों को पकड़ कर लाने को कहा ।

राजा द्वारा पूछताछ करने पर उन दोनों सेवकों ने स्वीकार किया कि "वजीरों ने हमें एक थैली अशर्फियाँ देकर अबू के खिलाफ झूठमूठ बोलने के लिए कहा था । हमलोग उन्हीं अशर्फियों के लिए आपस में लड़ रहे थे ।"

राजा को यह जान कर बहुत दुख हुआ कि अपने वजीरों की चाल में आकर उसने बेकसूर अबू को कैदी बना दिया । उन्होंने तुरत अबू को आजाद कर दिया और उससे माफी माँगी । इतना ही नहीं, उन्होंने अबू को अपना प्रधान मंत्री भी बना दिया ।

अबू ने मुस्कुराते हुए कहा- "हुजूर ! मैंने पहले ही अर्ज किया था कि मैं दूर से रह कर ही आप की सेवा करना चाहता हूँ, क्योंकि राजा के अधिक समीप रहना खतरे से खाली नहीं होता ।"

"लेकिन वे ही खतरे सच्चे और ईमानदार व्यक्तियों के लिए स्वर्ग की सीढ़ियाँ बन जाते हैं और खतरा पैदा करने वाले उनके कदम चूमते हैं, यह क्यों भूल जाते हो अबू ?" राजा ने अबू की पीठ थपथपाते हुए कहा ।

तीनों मंत्री राजा से हाथ जोड़ कर क्षमा माँग रहे थे । राजा ने अबू की ओर संकेत करते हुए कहा- "आप लोगों के अपराध का फैसला प्रधान मंत्री अबू करेंगे ।"

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां फरवरी १९८४ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

Devid Kasasbekar

B. Frasad

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ दिसम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अक्तूबर के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : ललचायी नज़र

द्वितीय फोटो : काल्पनिक घर

प्रेषिका : कु. शुभ्रा थालिया, रेल्वे कुटिर नं. G-108, मुरबाड रोड़. कल्याण (महाराष्ट्र)

उत्तर

(क्या आप जानते हैं ?)

१. एक औसत आदमी के शरीर की रक्त नलिकाओं की लम्बाई लगभग ५० मील होती है। २. मनुष्य की आँख सत्रह हजार प्रकार के रंगों को पहचान सकती है। ३. मनुष्य दस हजार किस्म की गन्धों की पहचान कर सकता है। ४. विश्व भर में सर्वाधिक शब्दों की भाषा है अंगरेज़ी, जिसमें आठ लाख शब्द हैं। ५. लियोनार्दो दि विंसी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, . Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

- दिमाग में खांसी के केन्द्र को काबू में करे.
- गले की खराश से राहत दिलाये.
- फेंफड़ों में जमा बलगम निकाले.
- छाती में स्नायु का दर्द मिटाये.

ग्लायकोडिन-एक विश्वसनीय खांसी की दवा जो ४ तरह से असर करे.

जागिये-एक नये आराम के साथ.

everest/83/ACW/307-hn

वॉटर कलर्स और पोस्टर कलर्स

मीना का जन्मदिन था. राजू के लिए यह
खुशी का मौका था. नंदू, विनय, रेखा, अशोक
सभी बच्चे शानदार तोहफे लाने वाले थे.

राजू की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या दे.
वह कोई खास चीज़ देना चाहता था, जो सबसे अलग
नज़र आये.

उसने बहुत देर तक इस बारे में सोचा. अचानक उसके
दिमाग में एक बात आई.

उसने सोचा— क्यों न एक अच्छा सा मुखौटा बना कर
दिया जाए? जिसकी टोपी में हरी पट्टियाँ हों, गालों पर
गुलाबी रंग और लाल-लाल होंठ.

उसने जल्दी-जल्दी में गत्ते का एक टुकड़ा लिया और
ब्रश से उस पर तेज़ हाथ चलाये. फिर क्या था—
मुखौटा तैयार हो गया. उसने उसे काटकर रख लिया.

मीना ने जब उस रंग-बिरंगे तोहफे को देखा, तो वह
खुशी से नाच उठी. हर कोई राजू और उसके तोहफे की
तारीफ कर रहा था. अगर राजू रंगने का काम कर
सकता है तो तुम क्यों नहीं?

कॅम्लिन प्रायव्हेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिविजन,
बम्बई-४०० ०५९.

कैम्लिन मनमेकेबल पेन्सिल
बनानेवालों की ओर से

VISION 791 HIN

Results of Chandamama Camlin Colouring Contest No. 32 (Hindi)

1st Prize: Prabir Kumar Dutta, Krishnagar. *2nd Prize:* Gireesh Vasant Chiddarwar, Yeomal. Rajesh Kumar Singh, Calcutta-700 040. Sandeep Kumar, Nangal Town Ship. *3rd Prize:* Deepak Kumar Bhusari, Kamptee-441 001. Neeraj Chaturvedi, Ghorabal. V. Manirmai, Rakshapuram. Pankaj M Chitinis, Ramnagar. Gujarati Devi, Mathora. Anand Kumar Banerjee, Nagpur-440 001. Ntin Charles, Meerut-250 006. Miss Niruppama Nagabhushanam, Aurangbad-431 002. Akhilesh Kumar Jha, Bombay-51. Kum Snehalata P. Sawant, Virar.

आलिमेसा

बेबी मसाज आयल

मुझे जो भी चाहिए
बढ़िया ही चाहिए ।

अपनी मालिश के लिए मुझे चाहिए सिर्फ आलिमेसा- इससे कम कुछ नहीं. आखिर मैं मजबूत इरादे का इन्सान हूँ-मेरा शरीर और हड्डियाँ भी खूब मजबूत होनी चाहिए ।
अगर आप सोचते हैं कि मुझे किसी और चीज से मालिश के लिए राजी कर लेंगे तो मेरे निजी सचिव से मुलाकात का समय निश्चित करके मिलने आ सकते हैं.

शलक्स कैमिकल्स
प्रबंध कार्यालयः ए-30, विशाल एन्कलेव,
नजफगढ़ रोड, नयी दिल्ली-110027

हर बड़े कैमिस्ट व
जनरल स्टोर पर उपलब्ध

WINNERS OF

1980-81

BDK599